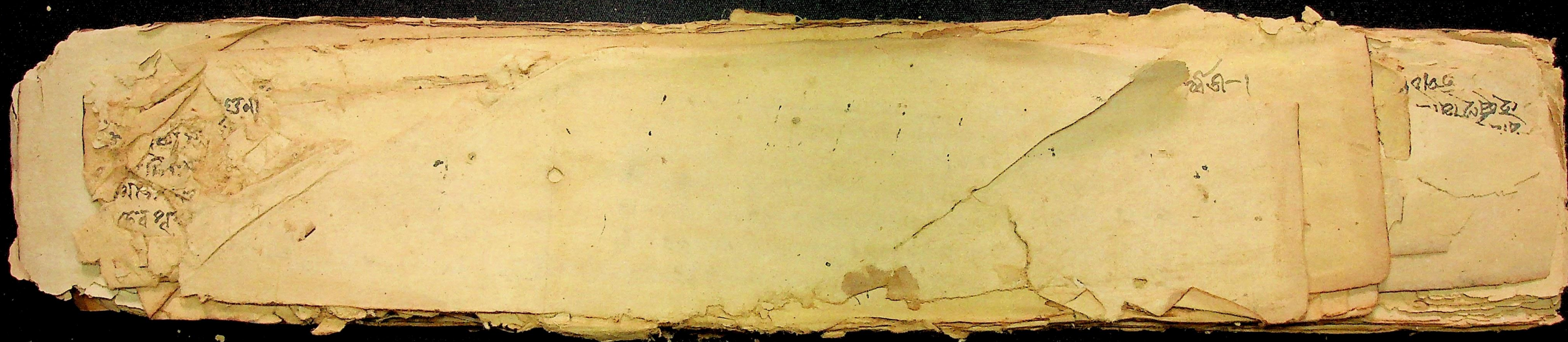










उमा

श्रीगणेशाय नमः । वसो दीनां गति सुदुः कथो न्येयं नमः । गते हो गते यद्वा गिदेवी कलम गार्थी- ।
आश्व निशके । नदी उका माह गानि प्रावा हे गि कदाचन । निशाय
उत्ते । इति च काश्चित्ते देहिना आः महश्च सुकटकमिदं कले । सिद्धि मं
प्राप्य ताते निवाया :- । अत्र ति निवमानि मं मर्थाद्वा सुय मान नोत्तरति
मकन उह न उदा उवा कर्तुं धाता ॥ ६ ॥ इति श्री गणेशाय नमः ॥
॥ इति श्री गणेशाय नमः ॥ इति श्री गणेशाय नमः ॥ इति श्री गणेशाय नमः ॥
॥ इति श्री गणेशाय नमः ॥ इति श्री गणेशाय नमः ॥ इति श्री गणेशाय नमः ॥

॥ इति श्री गणेशाय नमः ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

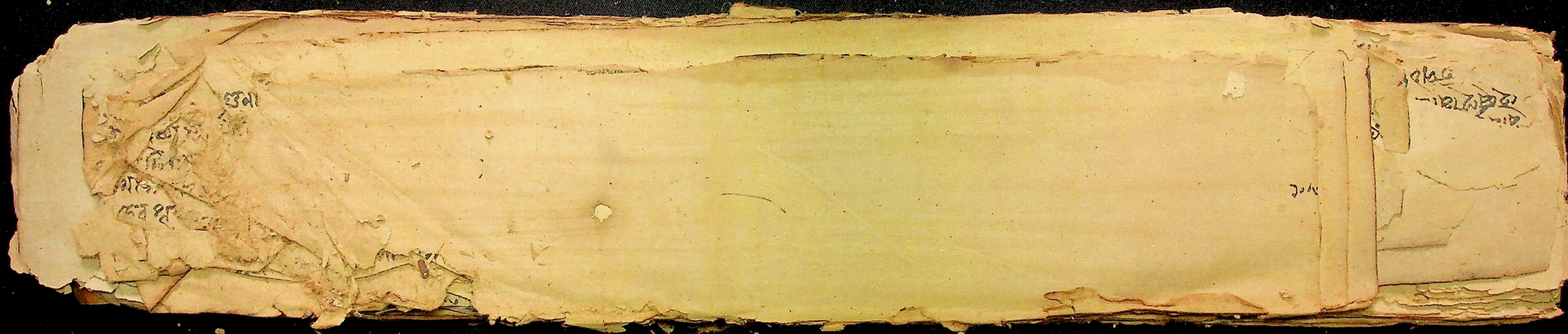
२०

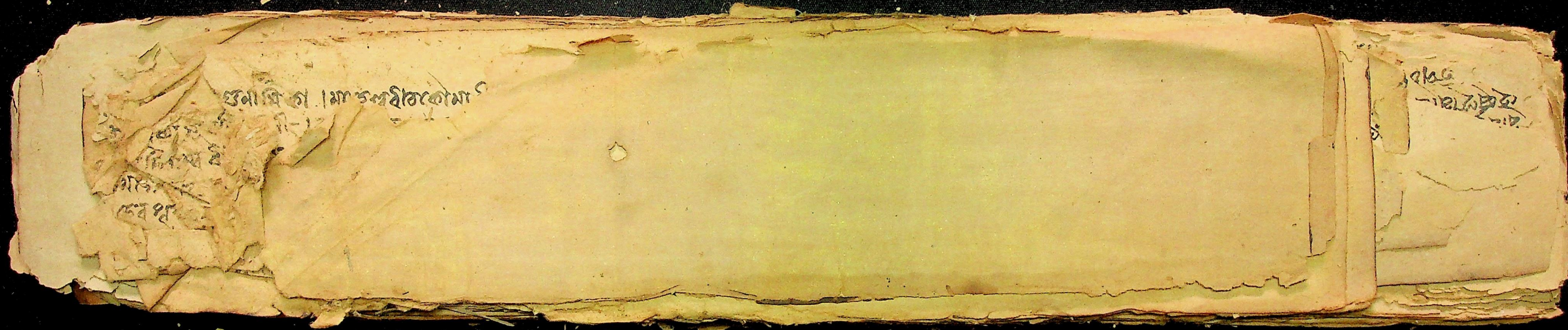
कमलनाभ
श्री कल्याण
श्री निम्बार्क

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय









उवाच । मन्त्रदीपकोशः

मन्त्र
दीपकोशः
मन्त्र
दीपकोशः

मन्त्र
दीपकोशः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । माहेश्वरीतन्त्रेण भाषितं ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । माहेश्वरीतन्त्रेण भाषितं ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । माहेश्वरीतन्त्रेण भाषितं ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । माहेश्वरीतन्त्रेण भाषितं ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । माहेश्वरीतन्त्रेण भाषितं ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । माहेश्वरीतन्त्रेण भाषितं ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । माहेश्वरीतन्त्रेण भाषितं ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । माहेश्वरीतन्त्रेण भाषितं ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । माहेश्वरीतन्त्रेण भाषितं ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । माहेश्वरीतन्त्रेण भाषितं ॥ १० ॥

1915
-1917

[illegible]

॥ नानावर्णविनाशिनी- । विकशाठ श्रकशाठ विश्रकशाठकशिनी- । कशाजीवाउथावेन्या
 कशिजाकका कशकशाठ कानिका- । ललांशुना महीनशनी भवर्नभक्त
 कशप्रभुभंशिता । वरुं कशावरुं भंशु भवर्वरुं मथी उथा । उंकाव
 लजयना शिनी- । जयकशाऊवा थाठऊशिनी- । जयवाशिनी- । मायामानशि
 या । श्राववाउ श्रना भूभनाठ गनाठ गन शिवा- । शक्तिना शक्ति कशाठ
 । वाक्रिता वाकनीयाठ भवर्वाका प्रनाशिनी- । उमांकी प्रमादाठशि
 निश्रुनी- । उगरीठ भम शिनी उ निश्रुनीति : भूभावरु । श्रयभुं भूना वाकाश्र

8 24

10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846.

১২: গতিঃ প্রত্যক্ষমায় চাক্ষর্যোঃ তথা শ্রীয়ে । প্রত্য: কান্তমধাহে মা: ১২

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मं. कान्ता. नमि. भो. मया. : । यः शठे. शवमा. उ. उ. ग. क. र. ना. म. म. इ.

ଦ୍ରବିମାସ୍ୟାଠକହାଟନ । ଏମାନେ ପ୍ରାୟଶଃ ନିମ୍ନମାତ୍ରାରେ ଥାନ୍ତି ।

ਪ੍ਰਮਾਣ ਮੰ ਗਏ:। ਭਗਵਾਨ ਸ਼੍ਰੀ ਮਹਾਂਸ਼ਿਵ ਜੀ ਨੂੰ ਅਰਪਣ ਕਰਦੇ ਹੋਏ। ਆਤਮਾ

মানক চক্রনে : ১৩২১নোবো চনাথেন্ঠাহি নিম্নে মাধাকোহন : ১৩২

আমি জি। ওয়াসি দ্বি মাহে মারি অটি বাসত উবি অতি। বনে বাজে কনে

[illegible]

[illegible]

1000
 1000

५१०३१-

113

तदित्येवमनमः । इति पूजाय ॥ ३३ः सत्ताजघानमः पूज ॥ आहवादिभ्यः कथं विप्रवै
 विष्णुदेवताकान् यथानाममावाचायाः सागोत्रा २५ ददे
 नमोऽपराधकथां पूज्या ॥ ३४ः यथकथा ॥ ३५ः नावदत्तवा
 कथायाः कथाः पूजा ॥ पूजादेवताकेनादिहृतायायातिविहवेम समस्तं देवदेविना कथं ॥ ३६ः ॥ ३७ः ॥ ३८ः ॥ ३९ः ॥ ४०ः ॥ ४१ः ॥ ४२ः ॥ ४३ः ॥ ४४ः ॥ ४५ः ॥ ४६ः ॥ ४७ः ॥ ४८ः ॥ ४९ः ॥ ५०ः ॥

कृष्णनादा-
 वृष्ट ॥ ४५
 तपस्वि

१२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

[illegible]

বাব
হুজুতাবা - বধূ
উপাস্তি

কুণ্ডলাদা - ॥ ৪
১১ ৪৬

নদ

নদনেবোষে বিপদমধুনা বাববশেখদিগেদ° ধৰ্ম্মাশ্রমবিনিগাৎ
বাহনভোজনদ্রব্যাদিষ্মিষমগজকশাণ্ডাঃ
এতৎ ॥ ৩১ ॥ দাম্ভজসম্ভবসম্ভবজাণ্ডা
বগণাভোমিহগাওহুগামুবাগোণা ॥ ৩২ ॥ বসুদ°বসুধা নো
! বাহনবেদি
দানবলৈ

দ্বিতীয়
সমগাঃ
১৩
১৪
১৫
১৬
১৭
১৮
১৯
২০
২১
২২
২৩
২৪
২৫
২৬
২৭
২৮
২৯
৩০
৩১
৩২
৩৩
৩৪
৩৫
৩৬
৩৭
৩৮
৩৯
৪০
৪১
৪২
৪৩
৪৪
৪৫
৪৬
৪৭
৪৮
৪৯
৫০
৫১
৫২
৫৩
৫৪
৫৫
৫৬
৫৭
৫৮
৫৯
৬০
৬১
৬২
৬৩
৬৪
৬৫
৬৬
৬৭
৬৮
৬৯
৭০
৭১
৭২
৭৩
৭৪
৭৫
৭৬
৭৭
৭৮
৭৯
৮০
৮১
৮২
৮৩
৮৪
৮৫
৮৬
৮৭
৮৮
৮৯
৯০
৯১
৯২
৯৩
৯৪
৯৫
৯৬
৯৭
৯৮
৯৯
১০০

[illegible]

[illegible]

॥ ४० ॥ आप्तः सकलजन्तुनां विप्रकोमलमणिः । प्रपन्नपराधानां हेतुं यदपीष्टियः
 नवीयः ॥ ४१ ॥ आधिपतिवत्सुखेनेवेका विद्वज्जगत्पतेः ।
 ॥ ४२ ॥ आधिपतिवत्सुखेनेवेका विद्वज्जगत्पतेः ।
 ॥ ४३ ॥ आधिपतिवत्सुखेनेवेका विद्वज्जगत्पतेः ।
 ॥ ४४ ॥ आधिपतिवत्सुखेनेवेका विद्वज्जगत्पतेः ।
 ॥ ४५ ॥ आधिपतिवत्सुखेनेवेका विद्वज्जगत्पतेः ।
 ॥ ४६ ॥ आधिपतिवत्सुखेनेवेका विद्वज्जगत्पतेः ।
 ॥ ४७ ॥ आधिपतिवत्सुखेनेवेका विद्वज्जगत्पतेः ।
 ॥ ४८ ॥ आधिपतिवत्सुखेनेवेका विद्वज्जगत्पतेः ।
 ॥ ४९ ॥ आधिपतिवत्सुखेनेवेका विद्वज्जगत्पतेः ।
 ॥ ५० ॥ आधिपतिवत्सुखेनेवेका विद्वज्जगत्पतेः ।

५ मेवनीति ॥ ४४ ॥ — ॥ किं पुष्पं दीव
काष्ठे निमिष्टं किं दितिं विक्रं जिह्व

दवाकनानां काष्ठः शीनी शमितनेदनाम् ।
दिभू विषवानना ॥ ४५ ॥ पनोमोक्ति १

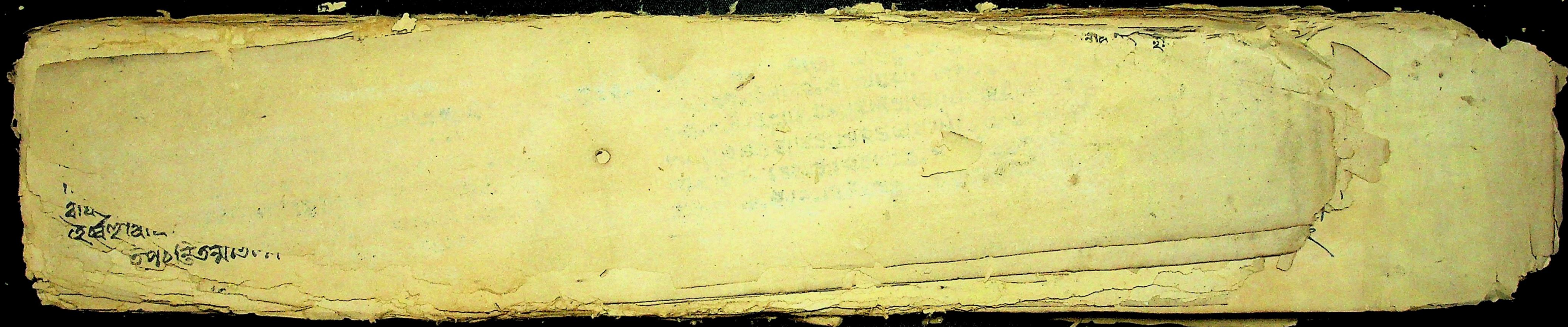
दा
हृष्यादा
उप

কৃত্তনাদী যথা শুন্যে কিনে নবাববে । কিংবা বধূনা স্তন্যোঃ সুবজতে গা. বা. কুব. গন্যমদ্রয়ং
বধূত ॥ ৪৫ ॥ ০ ॥ হি. বিদগ্ধমুখমলনং গ
মাস্ত্রং ॥ ০ ॥ লী. দ্রাম ॥ শী. গ. বিনী ॥ ৮

দায়
হু. দ্র. দ্রা.
উদ্য. বি. ত. মা. ১০০০



१.
बाय
हवा
जग



১.
বায়
হুজুয়া
তপচিওনা

श्रीगणेशाय नमः

गोदा

जनः

शुभावेष्टां गतिः सकलधर्माकर्मणः परमं ब्रह्म निदिं प्राकृतं द्रव्यं विदुषामि ॥ नागोक्तिमदनैकं ज
 नानाधर्मीनिनप्रमदजवेमउवगोनिनोम
 अथनकुनं देवावममतीनाकयं विष्णुमा ॥ १ ॥
 ॥ कः ॥ दूर्जमाचिउविउहवनेधातीनिउमोद्विमः ॥ २ ॥ वेष्टां
 वनि हव गउवयं प्रकं पाविजाजकं - वाजानरं कूमदिभिः पाविबुष्टं
 पाहिः ॥ ८ ॥
 ॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥
 ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

मिदिं प्राकृतं द्रव्यं विदुषामि ॥ नागोक्तिमदनैकं ज
 वेमदिबं - वानीयकवलयं - समिधुनेनधः - मतीपदि
 पातोद्विष्टवविवा निउवनेदीपा - प्रकावागमेनि
 इप्र - उद्विष्टविमोद्विष्टविधिमा - नोपायचिन्ता - जगामो
 पवत् - मष्ट - कुपचित - बाधायहीन - द्विज - बुद्धि - काप्रकष्ट
 देनाप्रमोपमव - ज्ञान - योवनगार्दिग - प्रमोदमा

दिनेदिने ॥२॥

विनीतः बुधाः ॥३॥ ना विष्टं कर्म न किं किमविधिः कोपश्चिच्छेद हिनां जातिश्च न मनन किं यदि मया हि केषां धेः किं न
॥ किं मया हि दुर्जनः किं धने विद्या यदि जातिनां न जाते किं धनं धनेः प्रकविता चेद्विवाद्येना किं ॥४॥ ना केवा
वहिर्जात न भूत न कछपेन मृता तपोना गेहो मिमिष
हर्षविधेः न मृक क्व के विधे मयि शो धधमहि ना
उपचिच्छेत्ता चेत्ता कश्च नो भवति श्रुतेना किं पिशुन गमयति किं पातकः सो जन्म यदि किं धनेः सुमाहिमा यदा हि

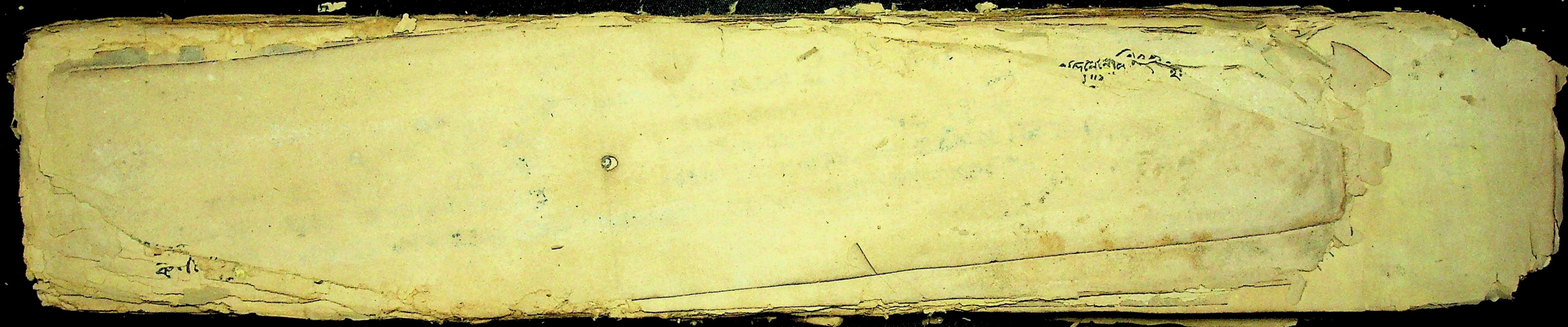
क. ॥

दिनेदिने
११३

विनीतः वृद्धः ॥ ७ ॥ ना विमृष्टं कर्म न किं किमविधिः कोपश्चिच्छेद हिनां जातिमृष्टमननकिं यदि मृष्टादि केषधेः किं न
॥ किं मृष्टादिद्वयः किं धनमिच्छा यदि जातिनां नृणां च किं मृष्टादिः प्रकविता चेद्विवाद्येनाकिं ॥ ८ ॥ ना केषवा
वर्षितं जनमप्युक्तं नृकर्मणः मृष्टात्पानागोत्रा विनिग
हर्षादिधेः न मृष्टात्पानागोत्रा मृष्टात्पानागोत्रा विनिग
उपचिच्छेदमप्युक्तं नृकर्मणः मृष्टात्पानागोत्रा विनिग

क. ११

नेः । सत्प्रपञ्चस्य चाकिंशुचि मनोयद्वास्तुतः प्रेमाकं सद्दिवायदिकपविषयमायद्वास्तुतः प्रेमाकं मूलनाइत ॥ ० ॥ इति
पञ्चवक्त्रकाकं समाप्तं ॥ ० ॥ ॥ ० ॥



सिद्धिनिधि
११३

२०६

॥ ५ ॥ धनुर्विष्णुपन कौमवसिं २ नहुवगन उदुयः कर्षकानिनामाः । आताववाहमिहिवानुप
संज्ञायां वक्षानिविवक चिनविक्रमया ॥ मि
दानायां आतावववद मिहं कमा ॥ मिहं अह
जमादवायवतीं अमासामेवाकवान अनुग्रं अत
वसेनसकनं नीनेनकृशाहनं ॥ ५ ॥ अंशानिधवमूदुतामिपतनं कीमाउवानापुनं प्राक्षं
॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ५ ॥

कमाउवानापुनं प्राक्षं

॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥
 ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

জনাযোচকান আমোয়াস্ নবক্ষণানিবাসিনঃ মোমিমাশ্রুতীযঃ ॥৪॥ কাপম্বোময়ঃ কুধা গুণহযোদধেনসল° কুধামম্বাদা
কগনেধানা নিবিপদাধেত° অমাদেদ্বিজঃ ॥ অশ্রুতেন কু
মমতযাচাম্যকামোহতঃ ॥৫॥ মূখ্য° নাতু শুপশ্রীক্ষি
পনঃ নাতু বিদ্রুমহীনঃ । আভ্রাহীনোমবেদ্যঃ শুচিবিপিনত° যঃ পবম্বানভোজীবৃদ্ধো যোগীদবিদ্রমচযুবতিমতিধর্মিতম্বাঃ ৪

ଅଜିତେନାମ ମିତ୍ର

ଅକାବ: ॥ ୬ ॥ ଶ୍ରୀମାଂ ଯୋବନମର୍ତ୍ତିନାମବ୍ରହ୍ମାଣ: ବାଜାଂ ପ୍ରତାପଂ ମତାଂ ମତଂ ସୁଧାଧନସ୍ତୁ ମତୁ ଗିବମହୁତସ୍ତୁ ବାଗଃ ସ୍ତବ: । ମାତାବି
ସ୍ତୁ ମହାଜନ: ପବିନତୋଷିତାକୁ ଚୁଷ୍ଟକୃତାହୁଜାୟା
ମଂ ଗାଦିପାଞ୍ଚିକ: ପବିନତୋମାମିଦ ବିଦ୍ରୋହୀ । ଶ୍ରୀ
ମାତାବିପ୍ରସାଦ: କୁନ୍ତରୋମୂର୍ତ୍ତି: ପ୍ରମାନ୍ ଶ୍ରୀଜିତୋବଦନ୍ତି ହୁମଂ କ୍ରିୟା: କିମପଂ ହାସ୍ୟାଧାନ୍ ହୁମେ ॥ ୪ ॥ ଓଁ ଶାମ୍ୟାତ୍ତିବୋ

କା.

১০৮
২

প্রকারঃ ॥ ৬ ॥ শ্রীমাং যৌবনমর্থিনামনুগমঃ রাজাং প্রজাপতঃ সত্যং সত্যং সুপথনম্ সত্যজিৎ সত্যদৃশ্যবাগডঃ শ্রবঃ । সাচাং
শ্রমশীজনঃ পবিত্রাশ্রিত্যকু ত্বশ্চকণা পূজায়া
সংগাদিপাশ্রিকঃ পবিত্রাশ্রিত্যকু ত্বশ্চকণা পূজায়া
সচিবপ্রিয়ঃ কুন্তবোমূখঃ প্রমাদশ্রীজিগোবদন্তী হৃৎসং ক্রিয়ঃ ক্রিয়পবং হাশ্রাশ্রাদং হৃৎসং ॥ ৮ ॥ ৬০ ॥

কং.

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

देशवसुधायै ॥
 पूनश्चाभोजन ॥
 ध्यायति सुतये ॥
 पुनश्च विदित ॥
 भक्त्याः पुनश्च ॥

五

45

कमलसिंह

[illegible]

कदम्बवृक्षश्च। पवित्रममृतमपि धातुसिद्धिवाधिकवर्णं कदाप्यालुविनर्थः। विदुः प्रवृत्तौ प्रवृत्तिगोपिकायां निवृत्तिश्च।

श्रीगणेशाय नमः
 श्रीगणेशाय नमः
 ईश्वरः ॥१॥

२०२-११२॥ श्रीगणेशाय नमः
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

শ্রবণাং বিক্রমসনমথকুক্রোহকামোবহব ॥ ২২ ॥ নবনববনাগো নীলপ্রজ্ঞাবতঃ শ্রবণমবসিঃ ২.
শ্রবণাং বিক্রমঃ । চাকচাকচমাসাঃ শ্রবণদ্রাক্ষ মানোজয়যুবাতি নিচোনং চেবযামাশ্রয়ঃ ॥ ২৩ ॥ -
কুনিকনিদ্রাহিগিহিতং দ্রকুনং মানো। কিতং মপ দিকেনজনেননীতং । শ্রবণমুখং সহজবাসবমা-
কুনাক্ষঃ দ্রাক্ষমিহদ্রকবদ্রাক্ষপদাধা ॥ ২৪ ॥ অপিচ ॥ আগন্তুমশ্রবণকণাবলুখানিষিক্তাহাত্যোনিযম

কন

মমঃ

માં યદ્વાપાગામિ । પ્રાપ્તમયાતદવકપરુતં નજાનાકિશાક નાઉવમુપેમિશ્વરેષ્વરકથઃ ॥ ૨૫ ॥ દેવીન્યાપૂર્વોવ
 નોક્યક્રમકં પ્રાપ્તિ ॥ માધાવમાધાવિદ્યમિદં દ્રુત
 ક્રુતનિવૃત્તિમુપોહિસાધ્યાદ્યં ૭ વિશ્વતિતે વિદિતે
 ક્ષાંતમિત્તમનિકુપ્તમાતૈર્કે । આનોનમશ્ચીનિદનેમૂર્ત્યૌ મુદાવિદ્યાધ્વજનદ્યજ્ઞધર્મ ॥ ૨૬ ॥

૩
૫૨

શ્રી
કૃષ્ણ

অসংখ্য বাসীকময়ালি

মর্মান্তিক প্রহর। তিনশত
মুহুর্ত। কোটকাবরকদম্মাখিনিং । আর কোটকাবরকদম্মাখিনিং ॥১১॥
আর কোটকাবরকদম্মাখিনিং । আর কোটকাবরকদম্মাখিনিং ॥১২॥
কোন ॥১৩॥ আর কোটকাবরকদম্মাখিনিং । আর কোটকাবরকদম্মাখিনিং ॥১৪॥
কোন ॥১৫॥ আর কোটকাবরকদম্মাখিনিং । আর কোটকাবরকদম্মাখিনিং ॥১৬॥

কোন ২

কোন ২

অনুবাসকমলা

বসন্ত প্রভৃতি। তিনশতক। সায় : নাথো বোঝন বিয়া মিক দাচনোহ নায়া নিগছত পন বধনা জনে সু ॥ ২৩ ॥ ৩৩
 গনঃ স্মিতঃ সীতাঃ স্কগঃ বিচিন্ত ॥ উমীথ্য নেপথ্য গনঃ স্মিত মুন্দ বাস্যাঃ স্ত্রী ভিত্ত মব বিদ্যা মিক
 নানা ২ । তথৈব পানি কমন দ্বিত্বঃ সমাশ্রয়ঃ বাস্য নিবসনঃ অবসানকৃত্য ॥ ২৪ ॥ অষ্টো বিহু
 তেব । বালাকগাতি প্রকৃগা নতর কমন মুক নিধায় প্রকৃষ্টিত মুদ্রন্যঃ । পানি সমাশ্রয় পদত্যাগ দ্রন্য দে হি বসন্ত

বঃ
স্বঃ

সন্নিভিদিং বসদাঃ সমুদ্রঃ ॥ ১৬ ॥ কথং: প্রাণবিশ্বাসৈব ॥ স্তায়ামানো বৈশ্যে বিধায় নেত্রমদীর্ঘময়নে বিধায় ॥
 পানীকমনী সমস্তাঃ যুগ্মং প্রাণবিশ্বাসৈব ॥ ১৭ ॥ অস্ত্রং যিহ্মকাগাতিঃ ॥ অস্ত্রং গোপীনাং যিহ্ম
 উত্তমো বশেষলোভাঃ মানোহু মিত্তবদনমুখানি ॥ ১৮ ॥ আনির্জানানি বিহিতা নিহ্মনানি ওমাদরাশ্য যংনদনতাং লুকা নি ॥
 বসদমিদিং দিগ্বিনতা বিহিতা ॥ ১৯ ॥ ৩৩৩ ॥

অদনকুবঃ

अथ लुब्धकं वाचं कथं भवति ॥

॥ ३० ॥ इति वसवोऽथ केनिवर्तनं समाप्तं ॥ ॥ ३१ ॥ अथादिना
 विधायमानं कनिष्ठवदनाः सप्तशतजम्भूः ॥ ३० ॥ इति वसवोऽथ केनिवर्तनं समाप्तं ॥ ॥ ३१ ॥ अथादिना
 उवेदधिविक्रमं सप्तशतजम्भूः ॥ ३० ॥ इति वसवोऽथ केनिवर्तनं समाप्तं ॥ ॥ ३१ ॥ अथादिना
 जलोत्पत्त्याः भूतनिधायदधिवसवपावसायः । कोटु
 म ॥ ३० ॥ अथादिना जलोत्पत्त्याः भूतनिधायदधिवसवपावसायः । कोटु

वः ॐ
॥ १ ॥

মঙ্গল

বঙ্গদেশের ইতিহাস

অষ্টম অধ্যায়
১৫
১৬
১৭
১৮
১৯
২০

৩২ ৥ ৩৩ ৥ ৩৪ ৥ ৩৫ ৥ ৩৬ ৥ ৩৭ ৥ ৩৮ ৥ ৩৯ ৥ ৪০ ৥ ৪১ ৥ ৪২ ৥ ৪৩ ৥ ৪৪ ৥ ৪৫ ৥ ৪৬ ৥ ৪৭ ৥ ৪৮ ৥ ৪৯ ৥ ৫০ ৥ ৫১ ৥ ৫২ ৥ ৫৩ ৥ ৫৪ ৥ ৫৫ ৥ ৫৬ ৥ ৫৭ ৥ ৫৮ ৥ ৫৯ ৥ ৬০ ৥ ৬১ ৥ ৬২ ৥ ৬৩ ৥ ৬৪ ৥ ৬৫ ৥ ৬৬ ৥ ৬৭ ৥ ৬৮ ৥ ৬৯ ৥ ৭০ ৥ ৭১ ৥ ৭২ ৥ ৭৩ ৥ ৭৪ ৥ ৭৫ ৥ ৭৬ ৥ ৭৭ ৥ ৭৮ ৥ ৭৯ ৥ ৮০ ৥ ৮১ ৥ ৮২ ৥ ৮৩ ৥ ৮৪ ৥ ৮৫ ৥ ৮৬ ৥ ৮৭ ৥ ৮৮ ৥ ৮৯ ৥ ৯০ ৥ ৯১ ৥ ৯২ ৥ ৯৩ ৥ ৯৪ ৥ ৯৫ ৥ ৯৬ ৥ ৯৭ ৥ ৯৮ ৥ ৯৯ ৥ ১০০ ৥

গজা
৩
২
৩২
২২

কোবেদনন্দনদ্বিজাবাওবাগবীষান ॥ বাধাযাত্রাবং তদাভাবং জহী হি যদনন্দনন্দনমাগচ্ছগচ্ছপবিবন্ধিতমসবরমান । অত্রাধুবা
 নমিহধুর্ষহনপ্রবীণপ্রহ্মামিষন সেশাসমধুবাং প্রজানি ॥ কাকো বিহস্যকমেব । অত্রাধুবাণা ক্রীড়াং প্রবীণক
 যানবিশ্রাম্যতিযঃ পদকাং । বিশ্রাম্য বিশ্রাম্যতনেকগাং ॥ ৩৮ ॥ ততোবাধাসাধিক্রম
 সাসোনং প্রজি । ৬০ ৥ যদনন্দনদ্বিজাবাওবাগবীষান ॥ বাধাযাত্রাবং তদাভাবং জহী হি যদনন্দনন্দনমাগচ্ছগচ্ছপবিবন্ধিতমসবরমান । অত্রাধুবা
 কতিকতিচয়ুবা

११ १२
 गगहिद्विबिक्रयकिं... ॥ ४० ॥ अस्माकं कियत्तिनवनीतप
 २ ॥ ४० ॥ अस्माकं कियत्तिनवनीतप
 ३ ॥ ४० ॥ अस्माकं कियत्तिनवनीतप
 ४ ॥ ४० ॥ अस्माकं कियत्तिनवनीतप

आगच्छागच्छ ।
सलतयामभुवा
वमजिं दउरु
५५ । ममदि

उजविपुत्रः ॥ ३३: सकः प्रविश्या वा ७५५ क्रियतां येन जव मृगजि ॥ सकः सहजवः पूरि वा दीर्घमूकः निःप्रश्नप्रन ह मो
सूनु विवद्येव उदा कथतां ॥ जावानशानवधन यदिथा
तिश्रुपवाधा पनमधीकः प्रयच्छा नियमः ७५५ सकः
मृधुवीनः ७५५ निग्रहण ॥ मममिजः कोयः कवश वा
पनोषमाना हविहिता जिनामः उदाधुवीणां मिनवा प्रवीणम
अनिश्रिप्तमवोधमिचलिः वाधा
विजमया हिमनिधान ७५५ मरु । रुकः मरु विमशगवीयान जावसुदमः पूराणाजिजवः

आगच्छागच्छ । क्रिप्रां विप्रं समस्तवर्णकान् आवृणुनादनिमिषं वाचयामि । आवृणुशान् वदन्मम मनः संगच्छ वरं
मनस्यैवामभुवान्मार्गः ॥ हृषीकेशविहसताङ्गप्रतिपन्नः
नमस्तु दण्डवत् । अस्मै समीपमासाद्य । शृणु वद ॥
५५ । मयादिप्रनतवाचिष्योऽष्टद्वेन ह्यनं सहसा हूयुर्गच्छ ॥ हृदयमपवित्रं कन्दनं प्रनतकन्यापयुताञ्जल्येन । वि

पुनश्चरिः

संज्ञा-१०॥

॥

विधकना विना समेना सुव न भवेन सहेव मत्र जावि ॥ एता विविध मन्त्राणि एत- नि कुक्षु मन्त्राणि यत्कादि विविध गार्भः माधवा
बाधया सह समुवां यद्यौ ॥ एत सुव बाधा श्चाने जावः निष्क्रिय नीष्टुं जावा उवां एव नि मा दा व पा वा भः श्रुतः ॥
इति जाव मन्त्रः समाप्तः ॥ ३० ॥ विष्णो यत्क मटि वेण निर्वर्तमानां बाधाः कव मभी ना वि वी श्च द्वाव । कृता निधा
य एव निः सह मा ग्रा वा वि धूनी प्र हं एव नि जा प्र नि ने त ना ति । बाधा म दे व मा ग न श्च कः प्र ति ॥ अगं धूनी फी जा धं विश्व म

१४

मुद्रा ७

[illegible]

पु
५
सः ७१
२६

महमाकृषपाव । एकः पञ्चदशविंशतिरुत्तरः पावकर्म विधिवत् दृष्टव्यं वंशं विधेयः ॥ एकः ॥ प्र
वति संप्रदायपवनं दृष्टव्यमाचनं उपनः । पञ्च विमीनज्जिबेवद्व निवन्नाजवाउवाणोः । प्र
गवादकप्राहृतिप्रयोजनं ॥ वाक् ॥ किंवा एव न विद्वान्निवां गवावेवकधैवदिनं प
कः प्रवीषि । एकां विनामपिपवां कूनकामिनीनामना प्रयेहि विविं पविवादनव ॥ एकः शिवाहृषणं

४८

वर्षाद यद्येवम् वावम् पावो विधेयः स्यादेवमेव विधीयतां वाधा कुरु पश्य ॥ कानि नो यं वधून न श्वीनास्ति तस्मात्
देन स्यात् ॥ यो पंचकृत इति नीलोचन मुक्तः स्वक
मम तव विधेयं कामवद्भानुपति ॥ वाधा कुरु प्रति
॥ ७९ ॥ क्रमं तदपि वा विनिश्चयं क्रमनीयमिदमेव ग्राह्यम् । अथोक्तं यथावत् ॥ लोकान् अधिकं कथयन् दूरं गतां वीनं

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

ନା । ଜି
 ଜବତ
 ନକାର :
 ତଂ ପା

[illegible]

ନୀ । ଜିବାମିତ୍ତଂ ଯନ୍ତ୍ରଂ ଯଦାକାମି ଶକ୍ତେନ ଦୀପ୍ତଂ ଶବ୍ଦୋଦୟମି ॥ ଶକ୍ତଃ କ୍ଷିପ୍ତଃ । ଶୂନ୍ୟମାପାତ୍ତଂ ନାମନଂ
ଜବତ୍ତିଂ ବିନିର୍ମିତ୍ତଂ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣକଞ୍ଜନାଦିତଃ ସଂ ନିଧାତ୍ । ଓଷା
ନିଧାତ୍ । ବାଧା । ଏତାଂ ଶକ୍ତିଂ ଶବ୍ଦଂ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣକଞ୍ଜନାଦିତଃ
ତଂ ପରିହରଣାଦିବକ୍ତବ୍ୟମ୍ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣକଞ୍ଜନାଦିତଃ ॥ ଶକ୍ତଃ କ୍ଷିପ୍ତଃ ଶୂନ୍ୟମାପାତ୍ତଂ ନାମନଂ
ନିବାତ୍ତିବିଷୟାନି ନିରନ୍ତରୀୟଂ କିଂଚିଦ୍ଦିବ୍ୟବିକାଶଂ ଶକ୍ତିଃ
ନାମିତ୍ତଂ ନିରନ୍ତରୀୟଂ ପଦମ୍ ପରିହରଣାଦିବକ୍ତବ୍ୟମ୍ । ଏତାଂ ଶକ୍ତିଂ
ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣକଞ୍ଜନାଦିତଃ ॥ ଶକ୍ତଃ କ୍ଷିପ୍ତଃ ଶୂନ୍ୟମାପାତ୍ତଂ ନାମନଂ

ଶ
ଶ
ଶ
ଶ
ଶ

॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते ॥

[illegible]

॥ ५ ॥ अथ विविध विधिः । इदानीं प्राणान्
उद्विष्टः ॥ इह उद्विष्टः कृत्स्नः कृत्स्नः विवाहः
काश्चित् नि निवर्तमानः कश्चित् कश्चित् ॥ अथ ॥

वा० वेवधनमग्नं वा० विवाविनमः महमा विकीर्णः । हवीर्य ककुटयो द्वूलं हुलं कनिष्ठद्विउत्तमा ॥ ५ ॥
 ॥ पयःपुत्रेः पुत्रादनवधनघृणाऽ-परलेगजिव कानिनी
 नक्तनया नष्टे हयो हयश्रुतेनिकन् गनं धटेयजि ॥ अ
 तमेवनज निवन्नोनक्तनयः । परजा नोर्विश्वं च वनागविहृतप्रपगतं राजानेबाधायाः निबानिवाविधिः किं घटेय

सः ३७
२५९

নঃ প্রাণা

এং বিধেহি
বাধা সমস্ত
তু প্ৰসাদে মা
॥ ককঃ স

তি ॥ প্রনমি প্রসন্ন ॥ হুবেব সুজনো মনোগপি দয়ানী নো নদী গম্ববঃ সিদ্ধ বম্ববন সিদ্ধি জন ধবেঃ পীণঃ সমস্তাদিনঃ । এষা
জীর্নত্বাৎ বিশ্ববানিজা পূর্ণা তব পৌরঃ কবেঃ । নো জ্ঞানৈ
যো হাযো বহতি মকং মণ্ডনী চতুর্বাণী জিগীষে নো তবান মতি
সমিত্তে ক্রিপ্রং ক্রিপ্রং সুভগত্বগা স্কিপ্রং ক্রিপ্রং ॥ ককঃ সিম্বাধোহং বাইয়ামি ॥ ~~ককঃ~~ তু বিমকণ প্রসীপাবনে

৪৮

এং বিধিপ্রতিমহু-প্রবিতিকাকুলকুলদ্রাচাতিঃ। জনাবিভিনিপাওকুরমাবাঃ বিয়ংকন বানমিঃ মপ্রমভিবহব ॥
বাধামমদ্রমং জাকোনাহমদবাধীকুল বিধিপ্রবঃ ধম
তুপ্রোদমানিকুলজীবিপ্রাহি মিহবে। প্রঃ শ্রুতঃ প্রমা
॥ ককঃ শ্রীরা ॥ যদিওগবতিনিমদানো বিয়ংবা বিপূর্ণ প্রমাশ্রিত হপাং নিরুতাপাযদ্রাচাতিঃ। অবববাসিজকুলদ্রদ্রমা

১
২
৩
৪
৫
৬
৭
৮
৯

ত্রিংশতিবিধপ্রতিগ্রহ-পুত্রিতিকাকুলকুলদ্রাচাতিঃ । জনানিবিড়নিপাশ্রয়মাবাদবিশংসকনিওবানমিশংসকপুত্রিওবহব ॥
বাধামমমদ্রমঃ দ্রাক্ষণামহমপবাধীকুলে বিধিঃপুত্রবাধাম কাকুঃ ॥ গজিবিকালিনীপয়সীওবানীওবদ্রবপ্রবিশ্রুব
পুত্রীওমানিকুলজীবিত্রাহিমিহবে । অতঃপুত্রপুত্রী মনাবিশ্রুমমীং মগবকবহ-যেজহাবিশংসকওবনীওগবজীং
॥ চকঃশ্রীহে ॥ যদিওগবজিনিমমদ্রানীওবিশংসকবিশ্রুমপুত্রমামিওদ্রপাও নিদ্রুতাপাওমঠেঃ । ওববকসিজকুলদ্রদ্রমা

बाधावि नम्रयन्तां तनवान्प्रसीं मद्रविश्यामिमद्रः ॥ बाधा ॥ अस्तु गच्छति मद्रवृत्तान्मृगयामि वक्रकन । आवनवोवनमृत्तयो
विं वि शुदामितवायं पविशमः ॥ अक्षः शिरोमद्रविप्रतिका वस्तिकतां ॥ बाधाप्रतिकावोवनानेव । बाधोमा १०
प्रथम हं वोवनपथं विना । बाधाशिरोकूकपावं वमनायां विपत्त-हृदयं । अक्षः शिरोवनितवान्प्रसीमधमा
मृत्तन नम्रजातं प्रनिर्ममतिमोक्तं पथपथविक्रमं । अतिनिविडनिकुसुमसुहृदिवकृतकपवनार्तेष्टप्रविशामि ॥

बाधविनाशार्थं श्रुतिविधिना नमस्कारं वाह्यं कुरुः शिवायाम् लोकादिभिः दिग्बन्धविपरिवारं कुरुः श्रुतिविधिना
विं विधिना पपन्नं । एषोह विदुषां वक्तव्यं निपा ७० कुरुः श्रुतिविधिना ॥ ७१ श्रुतिविधिना
पपन्नं । मन्त्रोपवागपठनीयं वा ७२ कुरुः श्रुतिविधिना ॥ ७३ श्रुतिविधिना
५ कुरुः श्रुतिविधिना ॥ ७४ श्रुतिविधिना ॥ ७५ श्रुतिविधिना ॥ ७६ श्रुतिविधिना ॥ ७७ श्रुतिविधिना ॥ ७८ श्रुतिविधिना ॥ ७९ श्रुतिविधिना ॥ ८० श्रुतिविधिना ॥

७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०

बाधविलोक्य हर्षं श्रुत्वा विभवेति नममाया ७ वाहवत्तकः शिवायसी कवा विद्यहि दिश्रुविपक्रवा म्को ज्ञानयत्रवि
विं विधिलोपपन्नं । एषोह विभुवदनेकवकनिपा ७० कवा जगामप्रनिन ॥ ७७ शुभगता व्रतविप
मममनोदमेयं भूमी । मदीपवागपटेनीपवाम
कन बाजमविभु वक्रवायाति चन्द्राभिचन्द्रनगरवा ॥ ७७ शुभः कूटयोः अननं विक्रय । मृद्वनं मित्रननवीरं

व
शु
भु
वि
क्र

তিগো
মুখ্য
। অত্র
কর্ম

শ্রুতিবিবিশিষ্টাভিনির্মিতং ২৩ ॥ এতন্মমজানানং ব্রহ্মপাধ্যকং দ্বিজং । ততোবাসাবলিং বিহস্য ৫ । অ
মোহমৌজামবলোক্যগাং বাক্যোযোমুদ্রবিসীমবা ৬ দ । দক্ষিণেদ্বৈতমবাসবাজিকজেনামিতং ক্রি
নিনকেতুঃ ॥ ততোবিবিশ্রমমমজিগাং তদব্রহ্মসমা ৭ বেগেনবাধ্যমমাপাং বিনায । তদগোবাধ্যমা
নির্মিতমুদ্রবিনাং বিস্মবনীযঃ । বাধ্যজীবনমৌহোদ্বিজবানবাক্যজীবং বিস্মবনীযইনুজাগাম ॥ ২০ ॥ ২

২০

[illegible]

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

[illegible]

[illegible]

एष
नपा
मः
मः
दिव
मः
मः

આવમદીયદેહમયંકવંદાશ્ચતિનન્દમૂનો । ઝકજુઠ-કિંવાજોયપનિયુકજુકાશ્ચમેવકિયતે-પનોવામદીયતે-ગર્ભઃ
કમવાકિયતે-તવનાવાકધિકાયા ॥ વાધાકવાયોપા રજુનાશ્ચિકમિવાતેવયતઃ ॥ ઝકઃ-કવગં-કદમાન્મ
વકદ્રાદિષુઠ-કવગ્રહઃ । ઝમાહિ । વાક્ષોજોત્વસા ટકુકુકાસીકેળાઘયા-અમવામાનિક્કં-દગનહ્મય
કવહ્મિહ્મિહ્મિનિનિહ્મિયોયં-મમાદાશ્ચતિ । વાધાદેદીયમાકકુષ્ઠયુગ્મં-નાવચ્ચવદ્-પવિહ્નમિદં-વિજાતિ । ઝમ્યા

અ
પા
મ
હ
કિ
મ
જા
ગ

पपविश्रुवातिमोक्रिकवशवयष्टिः शानाकयानाकमिति वक्रमयं नवीवः ॥ बाधाप्रगवदेकदाकवामदेयः ॥ बाजधानीं
जामहेतिप्रमीमांकोनाहनमहः ॥ इतिविविविधदपो ह्यागमाकर्तुंश्याहदिविनिहृत्तुशुभाकूनेनाश्रीनाया
ः सपदि कुचदूलं हवमः क्रियमिहं निरूपममथ
पाश्रीनायाः । एतकोनाहनं हृत्तुगलं कदासाकिणं चक्रः । उक्तः सप्रवयं बाधां प्रति ॥ दशमं मातिनसितं

पप
मपा
मः
मः
विश्रु
वः
का

मधुवानगर्थां ब्रह्ममिन्द्रमिन्द्राग्निमरुविगह्मगह्मोच्छेदिह वसमयंगमयाग्रंशतंशकं द्वास्तदधि विरयन क्रियाकं ॥ वा
धाविठिकागतिः नाम्नमं वीक्ष्यमाणानजाततः स भवतां क्रियात उपकागतिः । अश्रुप्रतिकं मधुवां २
प्रजानः । अकस्मिदाहवमद्वेकुकुहमिगमृगाः ॥ एवम्वीकुम्वमहमिगह्ममालप्रगाटं धत्तेवमं मूकन
प्रनकं प्रमगदं मनामं । पायं पायं नधुमधुकीमान्तीमद्वप्रवीप विमवे नीवसीधमूद्रीनीगजवा श्रिचवणानिपदानिगरो ।

गङ्गासाक्षिकमदितमममन्त्रिकाणां नामं नामं नमिन् नमिन् दूयति प्राणनामं ॥ ततो वाधा आद्यान्वावापुपविनीनेककठे
नां नम्रं प्रवृत्तवानावापुपुनः । कतवतीप्रममावतवेधु- ॥ ५० पत्रिषिर्मानेदिवाकवकुनेधमौकमूनश्चनेनाम्नामिन्
४० अत्रकमाभिन्तमूनवापुनां नीतावमानधुवधुकिउचक
यं वधुपतिः मं सावसावाकतिः । नहं उक्तमूगोमवाददममामो नोवाविधिर्लेत- शुभगताममिन्तिः प्रवतमवह्यमिज्जवनं ज

गङ्गा
मन्त्र
मन्त्रः
विष्
मन्त्रः
मन्त्रः

গান ॥ ৬ বাধাসমিতিঃ সহস্রমুবাংগতক্ৰীমকোবামহং মমিবামতাং কিত্তবধেকসহং নিষেধুং ক্রমঃ ॥ ১০ ॥ ইতি গোপাল
 টকা কেবিরচিতং দানমন্তঃ সমাপ্তঃ ॥ ১১ ॥

১০

১০

इन्द्रागणेशाय ॥ कश्चिदिति ॥ कश्चिदयस्कः वामगिर्याश्रमे सुवातं चक्रवापसहानमकरोत् । वामगिर्याश्रमे सुवातं चक्रवापसहानमकरोत् । वामगिर्याश्रमे सुवातं चक्रवापसहानमकरोत् ।
 वहा नलदग्धादहेनवामचलेन प्रियतमां गिर्याश्रमां २२ मासि प्रियतमां प्राप्ता मिश्रवोत्रमिनश्चुकीया दालनः कृपनश्च । अतिमृष्टा चलादिनिषेधा ॥ कश्चिदि
 त्रिपदानापन्यासः । आश्रमे सुकृमं मृतं सुजनकतनयां प्रान्तात् । केषु जनकतनयां गीतां श्याः प्राने पक्षिं जनं केषु सुकृमं मृतं सुवातं
 मेवुं सिद्धं छायां केषु सिद्धं छायां येषां ॥ अहं सुवर्वा येषु । यद्वत्
 कुरुते । यस्कः कर्ममृतः ॥ १३ ॥ कुरुवश्चापान्तात् सुमिति महिमा
 श्यापनकी हलानकात् । विवहृक्का कडाववल्गु गदिया गोनशुकानां मह्यः ॥ १४ ॥ कोनेति यावत् ॥ पक्षवत्माह प्राधिकारप्रमत्तः प्रमत्तप्राधिकारः प्राधिकारः
 कनकननिवक्रां ॥ अथ प्रमत्तः अवधानवह्निः प्रमादानवधानतनमवः प्रादिधिकारकनकननिवक्रायां ॥ १५ ॥ इति यावत् । यास्मिन्कानकतया सह तनजनविश्वः

अथ
 प्रमा
 प्रमत्तः
 विव
 वः
 प्रा

পবিত্রতা ॥৫

শ্রীকৃষ্ণ

বসন্ত
প্রাণ
নজী
নং
কৃষ্ণ
বিশ্ব
যে

কৃত্যস্মিন্ কালে দিগ্গজেন কনকিভীষ্মঃ কৃত্যঃ তনু কুবোণ সন প্রহিত্য সিন্ধীঃ । পুনঃ কীদৃশে নব বর্ষতো মেন বর্ষে কেম সমাপ্তন ॥১॥ সযক্ষঃ তস্মিন্ ব্রজো নব পর্ষ
তমেঘং দদন পশুং কদা আশাশ্চ মনো দিনে আদ্য দিবসে আদ্য দিনা কং ক্রোড়্য কজ চিত্ত কতিপয়ান মা সাননী বা স কাম্যতঃ অবলা বিদ্য যুক্তঃ প্রিয়া বিবাহিতঃ প্র
নঃ কীদৃশঃ কামী অথ বকন কুবন যশঃ সেন অধঃ পতনেন বিক্রোডাচ্ছ
নিদ্রিত সানুঃ আনিদ্রিত পর্ষত কদেয়ঃ পুনঃ কীদৃশঃ বশ পশুত প্রকা
তহু কং পবিত্রন কৃত্য যাতঃ কীদৃশা গজ উচ্ছত ॥২॥ বাজ বাজন্ত
কমল নিদ্রি বাতন্ত কীদৃশঃ ক্রোড়্য ধান হেতাঃ কাবণ্য যদ্রা কোপানী যত কতিগা ছত ক্রোম ২ ২ঃ তদা ধান হেতাঃ কীদৃশা যক্ষঃ অমৃত ষাঃ অত্র হৃদ য বা ষা
যস্য অশ্রু পা তনো ওমনা য কহং স্রুতিঃ কম্য মে বা মিতাহ মেঘানো কেম জি মেঘ দন নি সতি সুমেনো নি সুবত সুম যুক্তা পি চে তো মান সম মন্য মা ও বজি কং পুনর্দু

[illegible]

मोनिवपि एव सती ज्ञप्तिमिहः । नरुवनं मम प्रयोजनं किन्तु वरुवनगवगमनेमधनप्राप्तिविन्मोनिदगमनधनप्राप्तिदुवा निष्ठादिजिहवः । ११५
निकरान्ति विवहिगमः प्रक्रियते अजनायनदक्षुडिवां कर्मभूतं पवनपदवीमाकृत्मागत् पानिकरान्तिः कर्मभूतः दुःखं क्रियते अमकं हृदयं माडिः ११६
द्वुताः धनवादात्रा सनः प्रतया प्रक्रियते वाप्राप्तं कृषिकः मेवमनिन
क्रमसिजायां कडपक्षुतया विदमको विजायां कर्मभूतः विवहविधवां
मोवशां यो २२ पदाधीनद्वुताः पवशु कृवेवशु अधीनिद्वुताः कडनं यम
कर्मभूतः पवनः अनुकूलकाधीनकः मगहं प्रवामः वामः वामपाप्रावहितः मधुवः यमाशु कदेव नदतिनकं कावातिनमू प्रक्रियते वाः मेनडाप्रिद्वुतां मे
विद्यते उद्विक्कर्मभूतं नवनपूतगं लोचनप्रीतिजनकं प्रमः किन्तु गडिधानिकर्मपविद्यं दननं कर्मभूतं वनाकाः आवक्रमानाः आवक्रमानायादि

रुष
नपा
यः
मः
विष
वः
का

धर्म
ना
मा
प्र
म

श्रीः वनाकावकपः क्रोधादनाकाविनाका । वनाकाकामुकीनापुर्वनाकप्रवाकामतः ॥ १७ ॥ अथाप्रसविनाकाविद्युसिहं कम्पुतः आविहता आविहतागति
गमनं यथा साहसिचिह्ना यथायात्रिधानेन तदतिगमनमिहोभावः सृष्टिः अकापना कम्पुतः आविहता आविहतागति
पत्रांजीवनीं प्रनः कम्पुतः दिवसगणना ७२ पत्रां दिवसं यद्वि
उदतिगमनमिहोभावः सृष्टिः अकापना कम्पुतः आविहता आविहतागति
सादयः किमुतः सुसुप्तदृष्टः कम्पुतः सदाः पातिपतनीनं
आवहः प्रमत्ता सैतन्नामकैजानकेहितिभिः ॥ १८ ॥ अथाप्रसविनाकाविद्युसिहं कम्पुतः आविहता आविहतागति
पत्रांजीवनीं प्रनः कम्पुतः दिवसगणना ७२ पत्रां दिवसं यद्वि

[illegible]

दासिद्वय

११. अनंशयकी

पार्श्वः अथ विस्वादि

यस्य दंष्ट्राश्चतस्रः -

॥ ॐ नमो भगवते ॥

7625

वि. सं.

5107-12

[illegible]

बासिठिया

11. अनशयः

पुनः विस्वा जियत्

यस्य वैजयन्तस्यः

५८५५

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वैशालिका
ना. जनश्रयका. इति
पार्श्वे प्रणमिनवाजिम्पल
पुत्रद्वयशतम्

अथ शत
नमो भगवते
पुत्रद्वयशतम्
नमो भगवते

७

এবান্যশ্রুতীঃ কথ্যমানস্তৎকবচ্যেওকবসাযকুর্থাৎ ১২৪৭ দেবার্গাদেবাবিশেষঃ। কতিপয়দিনম্ভাষিনো২২ সাযমুতাদৃশাঃ সম্ভ৭মুত্ত
 বিধানি। কুমতিমেঘিআসথেসতিনিকটবত্তিনিমতি কথমুতাঃ
 জিনদেবানযেচৈতৎ চেডদেশপাদপইথুপানিহিনীপুনঃকি
 বনকুতযঃপুনঃকিমুতাঃ কনপবিণথোম্যামাজমবুবালাযেহ
 কথমুতাঃমাদয়ুতঃপুনঃকথমুতাঃচনোর্মিচনাডার্মিযমুমকড
 নক্ষণনামিচিহ্নেযসাবস্থাঃনক্ষণাদ্ভুতিদিত্তিমেদিনী। বাজধানীংগমোমমুমুক্ষণাদেবাতিকথকমকনঃপ্রযোজননক্ষাথবাশ্রাথান্যোনিবে

ইবানিহজাঃনীভাবমুগুহাবমুআকুনানিগ্রামচৈথোনিবন্ধ
 মুতাঃদশাঃসূচিভিত্তিবিভেঃকেতকেঃপুস্তকঃপাণ্ডুহাযোপ
 ১২৪৭ বেবথোঃপাযোজনপাম্যমিতিবোপান্তমুনিওমুওনঃযথাশ্রা
 দ্ধঃসুখমিবকিহুবোতেশাঃদর্শনানাঃদিগুপ্রথিতবিদিশানক্ষণাঃ

[illegible]

[illegible]

विष्णुः विवाहिनां जमाना ॥ कर्तुं पश्यन् विष्णुः शिखरः ॥ अनन्तरं ॥ १ ॥ विवाहिनां कर्तुं पश्यन् विष्णुः शिखरः ॥ १ ॥
सर्वान्मानसि प्रसादितान् ॥ अथ प्रसादितान् सर्वान्मानसि प्रसादितान् ॥ २ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ ३ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ ४ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ ५ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ ६ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ ७ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ ८ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ ९ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ १० ॥
विष्णुः शिखरः ॥ ११ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ १२ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ १३ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ १४ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ १५ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ १६ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ १७ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ १८ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ १९ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ २० ॥
विष्णुः शिखरः ॥ २१ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ २२ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ २३ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ २४ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ २५ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ २६ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ २७ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ २८ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ २९ ॥
विष्णुः शिखरः ॥ ३० ॥

[illegible]

नदीद्वयस्य मध्यस्थे नदीवाह्यप्रदेशे नदीवहेत्सीमा ॥३॥

কেনা পচন প্রচ্ছন্ন হইয়া গিয়াছে। ১২ সমীপবর্তি নদীসমূহ ১৩ ওয়াংখোটে ১৪ চুয়াচেয়া ১৫ কাম্বারবাঃ তৎসংক্রান্ত বিবরণঃ ॥

ধর্মবিচারে আমি
 নানিষ্ঠিত: কখন
 স্মৃতি: ॥ ২

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
सप्तमः ॥

अथ सप्तमः सर्गः

नामिनः श्रुत्वा वीरवत्सलः । नमोऽगिर्ध्वं विप्रनीवित्तिनं कलापटं ॥ १७ ॥ प्रहृष्टं प्रहृष्टं पवित्रं प्रहृष्टं ॥ १८ ॥ प्रहृष्टं प्रहृष्टं पवित्रं प्रहृष्टं ॥ १९ ॥

১৭
 ১৮
 ১৯
 ২০
 ২১
 ২২
 ২৩
 ২৪
 ২৫
 ২৬
 ২৭
 ২৮
 ২৯
 ৩০
 ৩১
 ৩২
 ৩৩
 ৩৪
 ৩৫
 ৩৬
 ৩৭
 ৩৮
 ৩৯
 ৪০
 ৪১
 ৪২
 ৪৩
 ৪৪
 ৪৫
 ৪৬
 ৪৭
 ৪৮
 ৪৯
 ৫০
 ৫১
 ৫২
 ৫৩
 ৫৪
 ৫৫
 ৫৬
 ৫৭
 ৫৮
 ৫৯
 ৬০
 ৬১
 ৬২
 ৬৩
 ৬৪
 ৬৫
 ৬৬
 ৬৭
 ৬৮
 ৬৯
 ৭০
 ৭১
 ৭২
 ৭৩
 ৭৪
 ৭৫
 ৭৬
 ৭৭
 ৭৮
 ৭৯
 ৮০
 ৮১
 ৮২
 ৮৩
 ৮৪
 ৮৫
 ৮৬
 ৮৭
 ৮৮
 ৮৯
 ৯০
 ৯১
 ৯২
 ৯৩
 ৯৪
 ৯৫
 ৯৬
 ৯৭
 ৯৮
 ৯৯
 ১০০

ନିକଟତମାଂ ସର୍ବାମାତ୍ରାମିତଃ ଓକ୍ତମୁକ୍ତକମ୍ପାଦିତମୁକ୍ତାମିତଃ ॥ ୧୮ ॥ ସମୁଦ୍ରତୀର୍ଥସମ୍ପାଦନା ॥ ୧୯ ॥

॥ १४ ॥ ^१ ^२ ^३ ^४ ^५ ^६ ^७ ^८ ^९ ^{१०} ^{११} ^{१२} ^{१३} ^{१४} ^{१५} ^{१६} ^{१७} ^{१८} ^{१९} ^{२०} ^{२१} ^{२२} ^{२३} ^{२४} ^{२५} ^{२६} ^{२७} ^{२८} ^{२९} ^{३०} ^{३१} ^{३२} ^{३३} ^{३४} ^{३५} ^{३६} ^{३७} ^{३८} ^{३९} ^{४०} ^{४१} ^{४२} ^{४३} ^{४४} ^{४५} ^{४६} ^{४७} ^{४८} ^{४९} ^{५०} ^{५१} ^{५२} ^{५३} ^{५४} ^{५५} ^{५६} ^{५७} ^{५८} ^{५९} ^{६०} ^{६१} ^{६२} ^{६३} ^{६४} ^{६५} ^{६६} ^{६७} ^{६८} ^{६९} ^{७०} ^{७१} ^{७२} ^{७३} ^{७४} ^{७५} ^{७६} ^{७७} ^{७८} ^{७९} ^{८०} ^{८१} ^{८२} ^{८३} ^{८४} ^{८५} ^{८६} ^{८७} ^{८८} ^{८९} ^{९०} ^{९१} ^{९२} ^{९३} ^{९४} ^{९५} ^{९६} ^{९७} ^{९८} ^{९९} ^{१००} ^{१०१} ^{१०२} ^{१०३} ^{१०४} ^{१०५} ^{१०६} ^{१०७} ^{१०८} ^{१०९} ^{११०} ^{१११} ^{११२} ^{११३} ^{११४} ^{११५} ^{११६} ^{११७} ^{११८} ^{११९} ^{१२०} ^{१२१} ^{१२२} ^{१२३} ^{१२४} ^{१२५} ^{१२६} ^{१२७} ^{१२८} ^{१२९} ^{१३०} ^{१३१} ^{१३२} ^{१३३} ^{१३४} ^{१३५} ^{१३६} ^{१३७} ^{१३८} ^{१३९} ^{१४०} ^{१४१} ^{१४२} ^{१४३} ^{१४४} ^{१४५} ^{१४६} ^{१४७} ^{१४८} ^{१४९} ^{१५०} ^{१५१} ^{१५२} ^{१५३} ^{१५४} ^{१५५} ^{१५६} ^{१५७} ^{१५८} ^{१५९} ^{१६०} ^{१६१} ^{१६२} ^{१६३} ^{१६४} ^{१६५} ^{१६६} ^{१६७} ^{१६८} ^{१६९} ^{१७०} ^{१७१} ^{१७२} ^{१७३} ^{१७४} ^{१७५} ^{१७६} ^{१७७} ^{१७८} ^{१७९} ^{१८०} ^{१८१} ^{१८२} ^{१८३} ^{१८४} ^{१८५} ^{१८६} ^{१८७} ^{१८८} ^{१८९} ^{१९०} ^{१९१} ^{१९२} ^{१९३} ^{१९४} ^{१९५} ^{१९६} ^{१९७} ^{१९८} ^{१९९} ^{२००} ^{२०१} ^{२०२} ^{२०३} ^{२०४} ^{२०५} ^{२०६} ^{२०७} ^{२०८} ^{२०९} ^{२१०} ^{२११} ^{२१२} ^{२१३} ^{२१४} ^{२१५} ^{२१६} ^{२१७} ^{२१८} ^{२१९} ^{२२०} ^{२२१} ^{२२२} ^{२२३} ^{२२४} ^{२२५} ^{२२६} ^{२२७} ^{२२८} ^{२२९} ^{२३०} ^{२३१} ^{२३२} ^{२३३} ^{२३४} ^{२३५} ^{२३६} ^{२३७} ^{२३८} ^{२३९} ^{२४०} ^{२४१} ^{२४२} ^{२४३} ^{२४४} ^{२४५} ^{२४६} ^{२४७} ^{२४८} ^{२४९} ^{२५०} ^{२५१} ^{२५२} ^{२५३} ^{२५४} ^{२५५} ^{२५६} ^{२५७} ^{२५८} ^{२५९} ^{२६०} ^{२६१} ^{२६२} ^{२६३} ^{२६४} ^{२६५} ^{२६६} ^{२६७} ^{२६८} ^{२६९} ^{२७०} ^{२७१} ^{२७२} ^{२७३} ^{२७४} ^{२७५} ^{२७६} ^{२७७} ^{२७८} ^{२७९} ^{२८०} ^{२८१} ^{२८२} ^{२८३} ^{२८४} ^{२८५} ^{२८६} ^{२८७} ^{२८८} ^{२८९} ^{२९०} ^{२९१} ^{२९२} ^{२९३} ^{२९४} ^{२९५} ^{२९६} ^{२९७} ^{२९८} ^{२९९} ^{३००} ^{३०१} ^{३०२} ^{३०३} ^{३०४} ^{३०५} ^{३०६} ^{३०७} ^{३०८} ^{३०९} ^{३१०} ^{३११} ^{३१२} ^{३१३} ^{३१४} ^{३१५} ^{३१६} ^{३१७} ^{३१८} ^{३१९} ^{३२०} ^{३२१} ^{३२२} ^{३२३} ^{३२४} ^{३२५} ^{३२६} ^{३२७} ^{३२८} ^{३२९} ^{३३०} ^{३३१} ^{३३२} ^{३३३} ^{३३४} ^{३३५} ^{३३६} ^{३३७} ^{३३८} ^{३३९} ^{३४०} ^{३४१} ^{३४२} ^{३४३} ^{३४४} ^{३४५} ^{३४६} ^{३४७} ^{३४८} ^{३४९} ^{३५०} ^{३५१} ^{३५२} ^{३५३} ^{३५४} ^{३५५} ^{३५६} ^{३५७} ^{३५८} <

[illegible]

[illegible]

पञ्च- अक्षि १२ ना. ०। मदीय २। (महानमः कलि ७)

पवित्रतननामादिनिर्गन्तकं हृदि मज्जितमवतः प्रसन्नमिदं वनात् ॥ २७ ॥ गजगवयमनावाहिसुमुखादेशे प्रसन्नमिदं वनात्
शयः । अत्रवहपवित्रमनादिनिर्गन्तकं हृदि मज्जितमवतः प्रसन्नमिदं वनात्
मः प्रसन्नमिदं वनात् ॥ २८ ॥ अत्रवहपवित्रमनादिनिर्गन्तकं हृदि मज्जितमवतः प्रसन्नमिदं वनात्
॥ ० ॥ इति कानिदासहृदयप्रसन्नमिदं वनात् ॥ ० ॥ प्रसन्नमिदं वनात् ॥ ० ॥

महानमः कलि ७
अक्षि १२ ना. ०। मदीय २। (महानमः कलि ७)
महानमः कलि ७
अक्षि १२ ना. ०। मदीय २। (महानमः कलि ७)

महानमः कलि ७
अक्षि १२ ना. ०। मदीय २। (महानमः कलि ७)

गजगवयमनावाहिसुमुखादेशे प्रसन्नमिदं वनात्
महानमः कलि ७
अक्षि १२ ना. ०। मदीय २। (महानमः कलि ७)

महानमः कलि ७
अक्षि १२ ना. ०। मदीय २। (महानमः कलि ७)

समस्तप्राणमोक्षाय ॥ १ ॥

साम्प्रतः ॥

सूक्तप्रमाणम् ॥ १ ॥

सद्विदः । समागतौ राजवद्वन्तश्च निर्वर्णागमः । कामिनः प्रियः प्रियः ॥ २० ॥
समस्तप्रमदाश्रमप्रभः । समीक्षितः स्वामिनेः समस्तुतः ॥ ३० ॥
नः । प्रसादितम् । वदन्तः विवर्णितावनीहकाः । आपमानाश्च न
पुनः । सूतिः कुसुमावपगमोपगमायुक्तद्विष्टः । असुतः प्रवागिना ॥ ३२ ॥

सूतिः ॥ १० ॥ आपः (वपुनिवाहीनिवर्ति) नीलाम्बा ॥ ३० ॥ आपः कस्तूरः मनाहवः श्रमोक्षनयसा ॥ ३० ॥
सूतिः कुसुमादिदम्बविदः ॥ ३० ॥ ॥ १८ ॥

सूतिः । अतिनायः विनापिलक्षणकविर्वेदांशुः । मनापमपम । अत्रान्तरादिभिरभिः ॥

पमिः ॥

सूतिः । अतिनायः विनापिलक्षणकविर्वेदांशुः । मनापमपम । अत्रान्तरादिभिरभिः ॥
सूतिः । अतिनायः विनापिलक्षणकविर्वेदांशुः । मनापमपम । अत्रान्तरादिभिरभिः ॥
सूतिः । अतिनायः विनापिलक्षणकविर्वेदांशुः । मनापमपम । अत्रान्तरादिभिरभिः ॥

सूतिः ॥ १० ॥ आपः (वपुनिवाहीनिवर्ति) नीलाम्बा ॥ ३० ॥ आपः कस्तूरः मनाहवः श्रमोक्षनयसा ॥ ३० ॥

[illegible]

विद्वत्प्रतिपत्तिरिति ॥
जातः १०
मम २०-१२
प्रकल्पप्रतिपत्तिरिति ॥
नामकुर्वन्ति जनिनीने ह विनीमुखः ॥ वना निवन्ता निहवन्ति मानसं विद्वत्प्रतिपत्तिरिति ॥ ३९ ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
पयोमर्ता ॥ वना ॥ कर्त्तव्यं ॥ ४० ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
नानामयोपगमना ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
॥ ४१ ॥ पयोमर्ता ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
॥ ४२ ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
॥ ४३ ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
॥ ४४ ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
॥ ४५ ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
॥ ४६ ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
॥ ४७ ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
॥ ४८ ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
॥ ४९ ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥
॥ ५० ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥ धृतिः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

^{कनीकदम ॥}
 पृष्ठ ॥ ४४ ॥ कदापि न ज्ञानमपि न केनचित् । विदुषां च ॥ ४५ ॥ सुमावृत्तिः । प्रतीकवा प्रोपवसप्रतीकः । प्रतीकं च
 कदापि न ज्ञानमपि न केनचित् । विदुषां च ॥ ४५ ॥ निबोधः । प्रोपवसप्रतीकः । प्रतीकं च
 वेदमनेः न निबोधः । प्रोपवसप्रतीकः । प्रतीकं च ॥ ४६ ॥ उद्विग्नः । प्रोपवसप्रतीकः । प्रतीकं च
 वास्तविकः । प्रोपवसप्रतीकः । प्रतीकं च ॥ ४७ ॥ मानाः कदापि न ज्ञानमपि न केनचित् । विदुषां च

জোজিগামিহাস বিদ্যাত যোষিগে চ । কল্যণবিশু কল্যণকমমমুদীতি কল্যণকনবচিগানবতঃ অকল্যণক ॥ ৪৮ ॥ কল্যণক
 প্রদুবচনচিগিগামিহাস পুষ্ণাবতঃ অমমুদীতি কল্যণক ॥ ৪৯ ॥ কল্যণক
 প্রদুবচনচিগিগামিহাস পুষ্ণাবতঃ অমমুদীতি কল্যণক ॥ ৫০ ॥ কল্যণক
 প্রদুবচনচিগিগামিহাস পুষ্ণাবতঃ অমমুদীতি কল্যণক ॥ ৫১ ॥ কল্যণক

বরদাশ্রয়প্রার্থী: সমস্তাৎ পবনচরিতাম্মি: সান্নিভিবনভিবনভিব । হস্তিগমিববিধপ্রসূতিভি: কেতকীমানবনানিননিচ্ছিত্তপাবনভি:
 ॥৫০॥ । নিবাসিবরুদমানাঃ সান্নিভিবনভিবনভিব । বিকসিতবনভিবনভিব । বিকসিতবনভিবনভিব: কেতকীমানবনানিননিচ্ছিত্তপাবনভি:
 যজ্ঞিননভিবনভিব: কান্তবনভিবনভিব ॥ ৫১ ॥ নদ্যতঃপূর্বভাগা
 নবজনকনসেতাদ্বীপাঃ বোম্বাঙ্গীঃ শিবনিবাসিতলোভিম্বনভিবনভিব ॥ ৫২ ॥ নবজনকনসেতাদ্বীপাঃ বোম্বাঙ্গীঃ শিবনিবাসিতলোভিম্বনভিবনভিব

মতবর্ণনামাং নাসকঃ পাদপানামাং জানিত্ত্বম্ভিমহঃ কেতলীমাং বজোভিষপহবত্মম্ভিমহ । প্রাধিগমাং মনাসি ॥৫৪॥ জনভব
 গমিত্ত্বনামাশ্রয়োঃ শ্রাক্ষ্মাষ্টবযামিত্ত্বজমসিকৌশ্বেদা প্রাধনশ্রাঃ । অজিমাষপকষাভিগ্নীষবহেঃ নিমাভিঃ সমু
 পজমিত্ত্বগপং হ্লাদযদ্বীধবিন্ধং ॥৫৫॥ বপুঃপদবমনী বঃ কামিমাং ছিত্ত্বহবিত্ত্ববিদেগপনামাং বাহুবোনিধিকা
 বঃ জনদগমযত্রপ্রাধিনাং প্রাণহৃতোদিত্ত্ববসুমাষিপ্রাধাসোবাকিত্ত্বনি ॥৫৬॥ ইতি কানিদাসপদগবুত্পং হাবিধাবি

[illegible]

दाः प्रमदाइवाद्यः ॥ ५९ ॥ कोमलहृदयः-नन्दननाम्नो वैष्णोः सुत्रितयान्तप्रवातः । ५९ ॥ अक्षयतेपवनवेगलः पवा
 देवाजेवामवनतवतिरी मारः ॥ ६० ॥ त्रिभुवनप्रथे कात्रिमामनाजं कसुकपुष्पावतिताकनितहृदिः । व ८०
 प्राप्ताकिकनमावृत्तहृदि ॥ ६१ ॥ कठयत्रिमामनात्रविक्रमार्धमः ॥ ६१ ॥ मन्मथिनाकुलितकोमलमकुर्वीकः प्रज्वालामादधिक
 सूत्रवपप्रवातः ॥ ६२ ॥ मन्मथिवरुपविपीतमधुप्रमेकस्तिताम्रिदावयतिनकोविदावः ॥ ६२ ॥ गवागनप्रह्वहृषणमदहृतीमघो

ମାତାବି ମାତା ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ । ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ । ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ । ॥ ୬୦ ॥
 ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ । ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ । ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ ।
 ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ । ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ । ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ ।
 ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ । ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ । ମାତାବି ମୁକ୍ତ ମାତାବି ବସୁ ।

दहनुदिनं वनश्रीलानां ॥ ७५ ॥ आरुण्यवनयनं च वानतानां निजागमात् प्रयत्नकववान् कृत्वा सुमानां ॥ ७६ ॥ उच्छ्रुत्वा पञ्चजवगां नाननीश्वर
 वनयूनां मनश्च यत्तिष्ठमत्तं च प्रान ॥ ७७ ॥ प्रोप्रादहं
 । मन्त्रप्रज्ञात्पवनोद्भूतवीतिमानाम्बुं कृष्टयत्तिष्ठ दयं प्र
 वत्तिनाद्यवियं पतको । धूम्रविपक्षपवनैर्वा वनाकाः पश्यन्ति नोन्नतसूत्रागगनं समयूवाः ॥ ७८ ॥ इत्यथ योगस्थितवान् । प्रानो

विश्वहंभानां विमलानां मधुप्रगीतान् । ॥ ५८ ॥ कदम्बमृदुलान् मधुप्रगीतान् मधुप्रगीतान् मधुप्रगीतान् ॥ ५८ ॥
 कानिकां सुमनसुमानां हवानि पार्श्वस्थितान् कदम्बप्रति ॥ ५९ ॥ पार्श्वस्थितान् मधुप्रगीतान् मधुप्रगीतान् ॥ ५९ ॥
 कदम्बप्रति पवनां विमलानां मधुप्रगीतान् ॥ ६० ॥ कदम्बप्रति पवनां विमलानां मधुप्रगीतान् ॥ ६० ॥
 ५९ ॥ कदम्बप्रति पवनां विमलानां मधुप्रगीतान् ॥ ६० ॥ कदम्बप्रति पवनां विमलानां मधुप्रगीतान् ॥ ६० ॥

॥ १३ ॥ अथानुष्ठानं ॥ १३ ॥ अथानुष्ठानं ॥ १३ ॥ अथानुष्ठानं ॥ १३ ॥

नकुलसु-नीलोपनामिकृत्वा निनिबन्धन ॥ १८ ॥ शिवः सत्तनवसिष्ठनसुतागामिनिनि ॥ सुविप्रनं वसकनापेः । पादाम्बुजं कणक
 वृक्षवामप्रविष्ठनायुप्ररुधमनामा विद्वधयति ॥ १७ ॥ शुद्धे ॥ सुसुमाह्वयनां वाजहं प्रावितां नवकठमन्त्रिणं प्राविनिह
 विजनां । प्रियमतिनवकपां कामतायानमानां स्वतिवि ॥ १९ ॥ सर्वसिद्धसुमप्रभादायवा
 वद्विनीगविगजजनदहनादिप्रिडागामनाडा ॥ विगकप्रधमः शुभ्रपट्टाधविनी विमनाकमनाकवनह्यं कामतावा विह्व ॥ १८

दिवसकवमयुग्मे कौकुमानः प्रतापवयुवतिमुमात्रं पद्मजं दृष्ट्वा हाकुमुदमानिगच्छन्ती यातल्लविस्त्रहसितदिवधुनां प्राक्षित-
 म्प्रापेयम् ॥ १८ ॥ आसितमयननं स्त्रीं नम्रगमिणीं पल्लव- इति कणककाकीं मधुं सप्रानधुं । अथैकचिबाला
 त्वां वन्दुजीवप्रियायाः पामिजनइदानीं वादिजिह्वुति ॥ १९ ॥ श्रीमां प्रहृष्टवदनधुं नानाकिनम्रीशमेषि ४०
 प्रहृष्टवदनकुमुदाकवलीः । वन्दुकाक्षिवधवधुं विनादिनीनाइलानिप्रयाति सुतगावदगमः श्रीः ॥ २० ॥ विरिचकमवकुशभुधु

नीलोपनासीहमिषा नवकाशयाजनानमिवासाः । समुद्रकृच्छिभाकारिनीवोमादायवृषभयुगलं ॥ १० ॥
 इत्युक्त्वा निदासकृत्वा उ मं शवैशवद्वन्द्वनमानिष्ठयैः ॥ ११ ॥ नवप्रवासादासशमवसाः प्रकृष्टमोक्षः पवि
 पद्वशाभिः । विनीतपद्मोनिष्ठयैः शवोहैरुक्तानः म
 न्दमनिष्ठयैः । विनीतनीनां पुनशाभिनीनामनं क्रियते पुनमपुनानि ॥ १२ ॥ नावाहूयुक्तमपुविनासिनीनां प्रयात्रि

मन्त्रं वनवाग्दीनानि । विष्णुविष्णुवृषं दहनं त्वं अकं नीम पयोधवेष्टु ॥ ८८ ॥ काकीश्वरः काकमवदृष्टिर्न स्याद्विष्णुप्रमदा
 निवृत्तान् । ननु प्रवेष्टुं मन्त्रं त्वं काविजः पादाम्बुजाग्रमुज्ज्वलं ॥ ८९ ॥ नाथानि कानीयवच छिन्नानि सपथनेश्वरा
 विष्णुमाम्बुजानि । निवांसि कानीयवच छिन्नानि सपथनेश्वरा ॥ ९० ॥ वज्रिणमहोदधिपानुवृत्ताः ॥ ९१ ॥
 श्रुतिरक्षी युद्धयत्कथाः । हसति मोक्षे क्षमाप्रतिदाने । प्रवाह्यमानानध्वानवेष्टु ॥ ९२ ॥ नीमश्वानावसूत्रावपीडाभाजा ॥ ९३ ॥

५३. गीतनजातः । एतन्नामैकं हिमः पञ्चद्विवाकः प्रती बोधसिनीतकानः ॥ ५८ ॥ प्रकृतमानीः कुरुमेष्टिगानि मृगासनाय
 थविहृष्टिगानि । गानोऽथवाऽथविहृष्टिगानि मीमांसु वान्म २ मूकवृष्टिः ५९ ॥ प्रकृतमानी २ प्रनमोति
 गानि ॥ प्रमृष्टाथानि मृगीतनानि मवाऽमिष्टा ॥ मिह वृष्टिः प्र-मा ॥ ६० ॥ पाठः ॥ प्रकृतमानी २ प्रनमोति
 मानामत्तः मरुतिः । प्रियप्रियमूः प्रियविप्रयका विनाशः ॥ पाठः विनामिनीव ५९ ॥ मृगामृगामो मृगादि वान्मनि

[illegible]

विद्याः प्रयाति मृदुमृदुतथाः ॥ ५७ ॥ निष्ठाया नाम पवित्रं किं माता जगत्सु मूलापनी यज्ञनीमनि वा कशुभाः । विना ब्रह्म न ज्ञानं तन्माय ॥
 कृष्णं किं न वचनामपवाशुकथाः ॥ ५८ ॥ अथाप्रियापवित्रं इह मावच्छ्रयमायं इह विविच्छिन्नं स्वरागमोऽयं । कृष्णं अ
 कं श्रुतं मृदु किंपतीकान्त्री च कं प्रविशन् कृत्स्नं श्री ॥ ५९ ॥ अथाप्रिवं मूलापनी पवित्रं मण्डाप्रियाः प्रविशन्ती यज्ञ
 माययाः । मं पीडमानविश्राना कपयाधवाताः प्रक्रान्तं विदधति प्रमदाः मूलापनीः ॥ ६० ॥ ब्रह्मं जगत्सु मूलापनी यज्ञनीमनि वा कशुभाः । विना ब्रह्म न ज्ञानं तन्माय ॥

विमलवर्णानि ककुलप्रामसीमः ॥ १७ ॥ मतिमान्मनुः क्रौञ्चमामपवीतः प्रदिग्वाहिममृकः कापमावाहसोऽरुः ॥ १८ ॥ इति श्रुत्वा नि
 दासकं त्रुत्तमं शिवो हर्मवर्द्धनं दामपुत्रः प्रगः ॥ १९ ॥ प्रकल्पानीकृत्या विवामं प्रमादित क्रौञ्चनिमा दामाजितं
 प्रकामकामप्रमदजन प्रियम्भावाक कानं निनिवाकयं प्रनू ॥ २० ॥ ॥ निरुद्धवर्णमममिहं बोदवः प्रुतागनाजानुमातागजसुयः ॥ २१ ॥
 उरुनिवासः श्रवणाः सयोवनाः प्रमादिकानेः प्रमममममेवता ॥ २२ ॥ नचमन क्रुद्धमहीतिनीतनं नहममिहं नवदिनमिमिमं ।

मवायवः प्राञ्जल्यवर्त्तमानाजन्मश्चिद्वनवहिसिप्राञ्जल्य ॥ १७ ॥ एवमस्य निपातनीतमाः नानाकृतातिः निनिविहताप्रनः । विपाञ्जल्य
 गणकवृषणाजनस्यमेवमस्यवहिसिप्राञ्जल्य ॥ १८ ॥ प्रहृष्टाश्चुनावि
 मिताविनिविहताप्रहृष्टाश्चुनावि ॥ १९ ॥ कृतापवाधवप्राप्ता
 मामिनः प्रियापवाधवप्राप्ताविप्रश्रुतः ॥ २० ॥ प्रकाशकानेः पतिभिः अनिष्टयन्निगामदीर्घाभूतिविमिताप्रिष्टमन्त्रिभिरुपमानादिताववः क्र

पावसानेनवयोवनाः श्रियः ॥१०१॥ मनाश्रुत्वा सकुं हृदयनाः सवागकोषेयहृदिताववः । निबिनिगुः कूसूनेः निबोकहे विहृयतीव
 हिमगमं श्रियः ॥१०२॥ पयोधवेः कुडूमवागपक्रिबिः सूक्ष्म पामेनवयोवनादुवेः । विनामिनीतिः पविपीडिताववः
 अपक्रिनीतं पविहृय कामिनः ॥१०३॥ सुगन्धिनिष्प्रासविकल्पिता ९० नमो नो हवड्कामवज्जिवाधमं । निगामुहृयः महकामि ४८
 विश्रियः विवडिमदं नदनीयमुत्तमं ॥१०४॥ अपगुवागायोविदेकाप्रताते दतनिविडकुछापनूवानिस्मानेन । प्रियतमपविडुडुं वीक

માત્રા મુદ્રા રૂંડુ જાતિ મયનવામાં મુદ્રામાં કથનાંત્રી ॥૨૨૨॥ થાક મુદ્રાંત્રી પાનાં દિગ્દર્શન માં પાનાં નાં નિમિત્ત દ્વિ
 મમાનાં ન મુદ્રાંત્રી કુવિત્ત કાપાન ॥૨૨૩॥ જાતિ રૂંડુ નિત્રા
 કામમોદા ॥૨૨૪॥ કનકક મેનકાંત્રી થાક વિદ્યા
 ઉદ્યાનિવદન વિદ્યા: રૂંડુ મં મુદ્રાંત્રી કોલો: ॥૨૨૫॥ રૂંડુ મુદ્રાંત્રી મં ॥૨૨૬॥ થાક વિદ્યા ॥૨૨૭॥ મુદ્રાંત્રી મં ॥૨૨૮॥

निवर्तमानपत्रमः सर्गः ॥ २२७ ॥ प्रह्वं नृणां कुर्वन्तु कृणां वाक्छिन्नमातामिदं नृणां । मनां प्रियं नृणां प्रमत्तिनां वसन्तु वाक्छिन्नः
 मन्त्रपातः प्रिये ॥ २२८ ॥ कृणां मन्त्रपातः नृणां मन्त्रपातः प्रिये ॥ २२९ ॥ प्रिये ॥ मन्त्रपातः नृणां मन्त्रपातः प्रिये ॥ २३० ॥
 मन्त्रपातः प्रिये ॥ २३१ ॥ मन्त्रपातः प्रिये ॥ २३२ ॥ मन्त्रपातः प्रिये ॥ २३३ ॥ मन्त्रपातः प्रिये ॥ २३४ ॥ मन्त्रपातः प्रिये ॥ २३५ ॥
 मन्त्रपातः प्रिये ॥ २३६ ॥ मन्त्रपातः प्रिये ॥ २३७ ॥ मन्त्रपातः प्रिये ॥ २३८ ॥ मन्त्रपातः प्रिये ॥ २३९ ॥ मन्त्रपातः प्रिये ॥ २४० ॥

२०० निविस्तीनां जघनकायः ॥ ११० ॥ कृष्णवामकनिष्ठकूलनिष्ठविष्णुनिविस्तीनां । नीलशुक्रैः कृष्णवामनिष्ठविवर्णैः
 यत्तुत्तनमपुनानि ॥ १११ ॥ कर्णध्यायाश्चैव किञ्चिद्वारं । धनवतीतन्धनकेशलोकठ । निमील्यप्रश्नं नवयुग्मिका
 मां प्रयाति स्रग्ध्रं प्रमदाजनम् ॥ ११२ ॥ सप्तपानप्रधुविला । प्रिलासीनां वक्रधृशमाश्रुशेषानेव वरुविमोक्तिरसंघक
 पः त्रिदोषमोदित्ववतामपेति ॥ ११३ ॥ उक्तायति मम मम नानिगायानि कन्दर्पसमाश्रितानि । प्रसीपेव उच्छ्वित्वा श्रोकसूत्रम्

११०
 १११
 ११२
 ११३

[illegible]

প্রকনিবাসাংসিবিহগুন্ডংনানিনাকবসবকুণি। মুগাশিকামপ্রকধুনিগনিধিওজনঃ কামবসাবিহিঃ ॥১৮॥ প্রংক্ষা
 কিনকুত সাসবনমতঃ প্রিয়াংমতিসাদবো। প্রকু ১৭ মদ্রিবেলিথ্যমজস্মাঃ ক্ষিপপ্রিয়ানাং প্রকবাতিচাটুঃ ॥১৯॥
 ॥১৯॥ জমপ্রবানাতুবকাবনমাপ্রুতক্রমাঃ প্রষ্টিওবচাক ২০ সাত্মাঃ। কুর্ষত্রিকাওপ্রবনাবধূগাঃ সমুৎসুকহেংননসো ৫১
 বধূমাং ॥ ২০॥ আমূলগোবিদ্রমবাগগায়াঃ সপস্রবাঃ প্রচ্ছাচেন্দ্রধামাঃ। কুর্ষনিগোকাহদযং সলোকং নিবীক্রমামানবঘৌবনামাং ৫২

मउद्विवेकविहङ्गिणकप्रधानमन्त्रानिनाशितेष्टाकमन्त्रप्रवणः । कुरुविकारिहृदयं सहस्रांशनाकं वागातिमूकनटिकाः सम
 वक्रमामाठ ॥ २३ ॥ कात्रानमश्नुजुषामटिष्ठ ह्यदग
 वं सहृदयं शुभावन्नकश्चकनपवानमोमिठं कमिठं हि
 शुकवलेः कूसुमावनाष्ट ॥ साद्यावमउप्रमयेन समागतायं वक्रांशुकानववधूविवतातिहानिः ॥ २४ ॥ किं कुरुविकारिहृदयं

मूमेनद्रुतं मनादेः किं किं प्रकृतेः प्रकृतेः प्रकृतेः प्रकृतेः । एकोकिलः प्रनवयमधुर्विषाडिधुनामनः सुवदनामियतं नि
 हवि ॥ २७६ ॥ प्रकृतेः कलनाडिप्रकृतेः प्रकृतेः प्रकृतेः । लज्जावित्रं प्रवि ७१
 नयं कलनामधुर्विषाडिधुनामनः ॥ २७७ ॥
 प्रकृतेः प्रकृतेः प्रकृतेः प्रकृतेः । प्रकृतेः प्रकृतेः प्रकृतेः प्रकृतेः ॥ २७८ ॥ प्रकृतेः प्रकृतेः प्रकृतेः प्रकृतेः

कथञ्चित्पुनर्वनामिमांश्वानि । त्रिंशन्मन्त्रानिहविर्ब्रह्मवागं प्राञ्जववागवद्विगमिमांश्वानि ॥ १७७ ॥ प्राणमिश्र
 वसनाः पुनर्वनाः कथञ्चित्पुनर्वनामिमांश्वानि ॥ १७८ ॥ प्राणमिश्र
 प्रसन्नवसनाः ॥ १७९ ॥ प्राणमिश्र
 विमलानिमांश्वानि ॥ १८० ॥ प्राणमिश्र

[illegible]

निन्दनममयुक्ताप्रपञ्चादिः । कदाचित्तयकादिपत्रावेष्टिताभिवर्जितवत्प्रभुः कानिनीनामिदानीं ॥ २४० ॥ कनककमलका
 त्रैलोक्यैः कीर्तयते पविनिर्दिष्टावेष्टितादिः श्रुताये ॥ मदजनिता विनामैर्द्रष्टृणां तैः समुत्थान्निमाधिनवनायः
 कावयतिप्रपञ्चः ॥ २४१ ॥ मधुसूतमिमांसां नाचनानोनव
 श्रुतवत्प्रवक्तृभूतः कनकापानामनाजः । श्रुतप्रममनिलुः
 श्रानिर्विहङ्गमैवमवर्जितमिदानीं वासिष्ठः प्रवृत्तः ॥ २४२ ॥ आकम्पिता निरुद्धा निमग्नानीनां वातैः प्रवृत्तमहकावयतां विवासेः ।

उमादकेः परवृत्त्यानदा श्रीनमोऽप्यप्रियमधुरव्याचनीयनाम्नेः ॥१४८॥ वसुप्रदोषप्रमयः पदुच्छ्रजः प्र० ॥ किल
 शिवितं पवनः सुगन्धिः । मत्तानिभृमविकृतं नि निनीधुपानं प्रवर्षं हिमप्रमिदं कुसुमावृष्ट्या ॥१४९॥
 ज्वालांजनाः प्रमोदिवाक्रितिपादपानां नीतुमेव हिपुनः किवर्षं हिमाल्याः । हर्मिष्याचतिवर्षं गानिनीनेषुका ॥१५०॥
 उाकगाटमूनग्रहजिनीजनरो ॥१५०॥ विमलकमसमश्रीमानिनीमालजप्रमोदमदनकाहुः कोकितानापदाहु । वसिक

प्रहजवस्तुः कामनीतिक सिद्धिदिनप्रदं प्रहः प्रोक्षमस्तु ॥ १७१ ॥ मनसपवनविदुः को। कलानापराधामधुसूत्रनिवन्धीदृष्ट
 गम्यवस्तुः विषयमधुपदार्थैर्विमानमस्तु। प्रहजवस्तुमदे
 जद्विवेकमनः कृष्ण। नीतिविदुः प्रहः प्रोक्षमस्तु
 मूमावगोदिप्रहः प्रहजगामोममिल ॥ १७२ ॥ इति कानिदासकथावृत्तं राविवस्तुवस्तुनानामधुः प्रहः ॥ १७३ ॥ सवायनं नमस्तु

ଓଁ ନାମୋ ମନୋହର ॥ କନ୍ଧିବ କନ୍ଧା ବିବହୁ କମା ସାଧିବା ପ୍ରମତ: ॥ ମେନାତ୍ର ଗାମିତ ମାହାବର୍ଷା ଗୋପନ ଗର୍ଭ: । ଏକମାତ୍ର ଜନକ
 ତନୟା ମନୁଷ୍ୟାଦି କୋସ୍ତୁକ୍ତି ଶ୍ରଦ୍ଧା ଯାତକ ସୁବିଗତ ବାମ ଗୀତା ଧ୍ୟାୟେ ॥ ୧ ॥ ଓମ୍ ନିରାଦୃଶ ଗତି ଦିବ୍ୟ ଲାବି ପ୍ରସୁକ୍ତ: ମହାମାନୀ
 କ୍ଷମାମାନ କରକରନୟନ ସିଦ୍ଧି କ୍ରମେ ଶେଷ: । ଆଶା ଚକ୍ର ପ୍ରମାଦି ବସେ ମେଘମାନି ଶ୍ରେଷ୍ଠ ମାନୁଷ୍ୟ ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ୍ ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ୍ ॥
 ନିର୍ଦ୍ଦୟ ॥ ୨ ॥ ଓମ୍ ନାମୋ ମନୋହର: କେତକା ସାମାନ୍ୟ ବସୁଧା ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ୍ ବୋବାଜ ବାଜେ ଧ୍ୟାୟେ । ମୋହାଲୋକେ ବସି

[illegible]

কামকপংমোদনঃ । তস্মিন্মিতং হোমবিধিবন্যাদৃববকুগি অহং যচ্ছ্রামোদাববাহিত্যমেব মেননকামাঃ ॥৬॥ সন্তপ্তানাং
 মসিনবগুপ্তং পোদপ্রিয়ায়াঃ সন্তপ্তানাং হবধনপতিকোষ
 হোদ্যামাহিতহবানিবস্তিকাকৌতহশ্মি ॥৭॥ কামাক
 প্রতবাদাশ্রমলঃ । কঃ সন্তপ্তো বিবহবিম্বাং হেপাক্ষজায়াং মন্যদাম্যপ্যহমিবজানোবঃ পবাধীনবৃত্তিঃ ॥৮॥ মনঃমনঃমুদতি

পরমেশ্বর কৃণো যথা হোং রামন্যায়নমতিমধুবদ্যতকা শুভাগবৎ ১। গভ্রাবানকমপবিচ্যং নুনমাবদ্যমাণঃ—অবিচ্যন্তুনয়নামহা
 যনমুগাং মেতরতুনাকো ৥২৥ অক্ষরন্যং দিবসায় গনাতপবাক পদীমর্যাপরামবিহ্যাদি দক্ষসিহাঠ
 জায়াং। আশারক্ষঃ দক্ষমহম্যপ্রায়মোহাঙ্গনানাং মহাপাতিপ্রগয়িতদয়ং বিদ্যোণাকগন্ধিঃ ৥৪০ ৥
 কৃতং যচ্চ পতরতিমহী মূচনী প্রাতপরাং প্রহরায়গং সত্যং গভ্রিতমানমোহকোঃ ১। আকেনামানিসকিমলয়হেদপায়েব

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥ आपहस्य प्रियमयममुं उद्दिमानिश्चलेन वस्त्रैः प्रसां वदुर्गदेवकि
 तं मे मलाशु । कानेकाने उरति उरतो यम्यमं यो ग मेन मे हवा श्रितिव विरहजं मुखतो वासपमुत्तमं ॥ १२ ॥
 मार्गद्वारेण शयनमयतमद्वयं प्रयाना नूकपं माद्वयं मेत दनुजनदलापसि लामपेयं । निन्नः निन्नः निन्नः निन्नः ॥ १३ ॥
 पदं ग्राह्यगता निवश्रुतिगः श्रुतिनः पविनवपयः श्रोतमात्रोपयुज ॥ १४ ॥ अर्धः प्रसं हवति परः किञ्चिदिदं मुनीति हृष्टे

গরুড়কিত্ত্বং স্বাস্থ্যসিদ্ধাঙ্গনাতিঃ । জ্ঞানাদম্মাৎ সবসনিবুলাদ্রোণোদভ্যাসঃ ২০ ৥ দিগ্ভ্যাগ্নান্যাপত্রপবিত্রবন স্মৃনহস্তা
 বনেপান ॥ ১২ ॥ বজ্রহাযারুতিকবহরশ্যোক্ষামেতৎ ২১ ৥ বস্ত্রাদম্মীকম্মাৎ প্রভবতিধনুঃ ২২ ৥ অম্মা ২৩ ৥ যেন
 শ্রামং বস্তুবতিতবাং কান্তিমান সাততবর্হেনের স্মৃতি
 কৃষিকলমিতিস্বরিকা বানতিজৈঃ শ্রীতিস্মিৎ জ্ঞানদবধুলোচনৈঃ পীযমানঃ । সহঃ সীর্ষোৎকরণস্বতিক্ষমা কহমানঃ

किंकिरेपन्थाः कुजलयातिः किंकिरेदोषोऽवेन - ॥ २७ ॥ अथ क्लृप्तः प्रतिमुखात् मायया नृपकृष्टं सुमेनदोऽनेन दानि वभारश्च
जिह्वावमानः । आभावेन वेमनि समस्तुया नैदानमधि मन्त्रार्थः कलतिन विवेकोपकावो महत् ॥ ४१ ॥ तामा
भावप्रगतिरुत्तरानोपपन्नः मायुद्धा वधन धवप्रमपविा ७ मायया नृपकृष्टः । नृपकृष्टो निप्रथमसूक्तोपायः ॥ ४२ ॥
मथयाय प्रामोमिदं विविमुः किंप्रनयस्तुथोक्तेः ॥ ४३ ॥ इत्योपातः पविन कलथातिः काननाः सः सन्मा कलतिन वमठनः सि

मन्त्रार्थः कलतिन विवेकोपकावो महत् ॥ ४१ ॥ तामा ७४

স্বনং যাস্থ্যমকমিশুন প্রক্ষণীয়ামরস্থাঃ মাধোঃখ্যামঃ সুনং রতুরঃ মাধুরিষ্ঠ্যবপাঃ ॥ ১০ ॥ দ্বিতোঃগম্বীরবনচববুত্ৰকদম্ব
মুপ্তং তামাঃসগাঃকতরগতিষ্ঠ্যপবঃবমেজিগঃ ।
দেবিববচিষ্ঠ্যঃ বৃত্তিমগোঃগম্বা ॥ ১০ ॥ তস্যাস্তিষ্ঠ্যে
যঃ তামাদায়াগে । অস্তঃ মাধঃবনতনয়িতঃ নানিনঃ মাধ্যতিষ্ঠ্যঃ বিষ্ঠ্যঃ সক্ষোঃতরতিষ্ঠ্যঃ স্বনংগম্বীরবায় ॥ ১১ ॥ নীপঃ

कदाचित्कानि गणकेन विवक्ष्यन्ति वा विवक्ष्यन्ति मन्त्रानां कुरुनीश्वरकः । दक्षावप्यवधिकसुवर्चिः गङ्गाया वचोऽप्यः प्रावक्ष्यामि
 ननरमुतः मृत्युमिति मार्गः ॥ २५ ॥ अथो रिदुष्यन्ति वत्सा
 रत्नाका ॥ १ ॥ विष्णुमायुः सुनिवसमाने मानयिष्यन्ति सिद्धाः
 अथो रिदुष्यन्ति वत्सा
 पन्थाय दत्तमानसमेव ॥ विष्णुमायुः सुनिवसमाने मानयिष्यन्ति सिद्धाः
 पन्थाय दत्तमानसमेव ॥ विष्णुमायुः सुनिवसमाने मानयिष्यन्ति सिद्धाः

শ্রীমদ্

কৈলা: প্রমুখাত্ত কাম্যমপি ত্রায়াস্ত্যাদুৎসবম্ — ১২৬ ॥ পাণ্ডুজায়া পরন বৃত্তম: কৈলা: মূতি ত্রিবিদীভাবভূতবানি
 ত্রজামাননশ্যামঠেনাঃ । দেয়াসম্রে কলপবিগতি ২৪ম জম্বুবনাত্তা: সম্মা ১২ম ত্রুতিপদ দিনমুখি
 হংসাদশীদ্রাঃ ॥ ১২৭ ॥ ত্রয়াঃ দিক্শু প্রমিত বিদি ৩৪ নক্ষত্রাঃ স্বাজধানী: গদামত: কলম ত্রিমহ
 কাশকম্মশনকা — । জিকোপাশুসুনিওসুগাং পাশ্যামিমা দমুত্ ৩৪-৩৪-৩৪ মূখমিরপদা কৈবলা শনোমি ॥ ১২৮ ॥

[illegible]

লোলাপাঙ্গৈর্মদিনমরসে লোভনৈবকিতোসি ॥২২॥ বা তিক্ষোতমুদিতবিহাঅনিকাকিণ্ণায়াঃ সঙ্গমস্বাঃ
ম্মলিতমুগাং দার্মিতারুণাত্তম ৷ নিব্বদ্যয়াঃ পথিতবস্মা যতুব সারিতান স্দিগমাঃ প্রণবর
তনং বিবদ্যাহি প্রিয়ব ॥ ৩০ ॥ বেনীপ্রতপ্রতনু সানিনাং তামজীতম্মাসিঃ সুঃ পাণ্ডুহায়াত্বেক
হুতকং শিতিঃ শীতপলৈঃ ৷ লোভাথাত্তমুগা বিবহারম্ভয়া বম্ভয়তীকাঃ যেন নজতি বিধিনা মদৈবোপপদ্যঃ ॥৩১॥

প্রার্থ্যারূপীষদগ্ননকথা কোরিদশ্যামরিদ্রাং স্বর্গে দিক্রামনুসবপ্ৰবাঃ প্রাধিমান্য বিমানাং । প্রলী যত সূচকিতকলে
 বর্গিনাং গাঙ্গানাং লবেঃ প্রাণ্যে হুত মিরদিবঃ কাতিম ২২৭৮৮ ॥ ৩২ ॥ দিবাঙ্গকন পদুমদকন কুজিত
 মারমানাং প্রাণ্যে হুত মিরদিবঃ কাতিম ২২৭৮৮ ॥ ৩২ ॥ দিবাঙ্গকন পদুমদকন কুজিত
 প্রিযতমহ প্রাণ্যে হুত মিরদিবঃ কাতিম ২২৭৮৮ ॥ ৩২ ॥ দিবাঙ্গকন পদুমদকন কুজিত

[illegible]

॥ ३७ ॥ पादप्राप्तकनितरसनस्तुपनीना वृष्टे वृष्टाया अतिवनिविश्यामवेः कावृष्टा १ वेत्याम्हानम
 पदमुत्थानपापवर्षावविशुना वाप्रातिदिशिमधुर्व
 मृगानेना तिनानः समस्तुजः अतिनवजवा प्रष्ठावृष्टा
 त्राद्वेगतिमितनयनं वृष्टे अतिवृष्टा ॥ ३८ ॥ गृह्णीना वृगवसिष्ठं वापिता नृगनकं वृष्टानो केनवपतिममेष्टु

विष्णोर्मुद्राः । ओं नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । ॥ ३० ॥
किं दुर्वचनं मुमुक्षुपातवायां नीलाकांतिं विविदिम
नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।
विष्णोर्मुद्राः । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय । नमो भगवते वासुदेवाय ।

[illegible]

১৩৩। দত্তি: নীলমাত: । নীলৈক্যমুপজিগমিষো দেবপুত্রং বিব্রুজীতাবাঘ: পবিত্রমধিতাকাননোদয়বাণাং ॥৩৩॥
 অক্ষয়মিতরসতিং প্রচল অদ্বীজগামো অক্ষয়মা বি: অক্ষয়তরান কোমলমাজনাং ১ বক্ষ্যতে
 অক্ষয়মিতরসতিং প্রচল অদ্বীজগামো অক্ষয়মা অক্ষয়তরান কোমলমাজনাং ১ বক্ষ্যতে
 গনিতং যক্ষবহুতরান অক্ষয়মাজনাং অক্ষয়তরান কোমলমাজনাং ১ বক্ষ্যতে
 গনিতং যক্ষবহুতরান অক্ষয়মাজনাং অক্ষয়তরান কোমলমাজনাং ১ বক্ষ্যতে

[illegible]

માનાં પદ્મોદયે પદ્મપદ્મવિભિન્નજલમાવપ્રભાનાં । સન્નિપાત્યામધુરવાદ્ધમાભ્યભિન્નપાશીરુચિરમાધુર્યવધુને
 વલોકીતુરનાનાં ॥૪૨॥ અથાવત્તજનપદમધુર્ય
 વાજ્યાનાં સિતમવશાત્તથાગાત્રીવધવાધાવાપાતે
 મતિમત્વમાં વેરજી લોઠના ક્ષાં વધુશીલા સમવરિમુખોના પ્રનીયાઃ સિધેરિ । અહામ્મગમાધિગમમાપાં મોમમાવસ્ર

जिनामनुष्यकर्ममपि उरिगवर्गमाप्यनक्षत्रः ॥८१॥ उन्मापावर्गकनयनं लोनवाजावर्जितः जालाः कन्याः भागवतयश्च
गोपावपक्षिः । लोवीवर्जकनदि वचनां याविह
हस्ता-॥८२॥ उन्माः पाउं सुवाजह्वरेकोमिदुर्वा
मममनामपदि उरुतः होउमिहायामायादमनामपगउयमामममना विवाभा-॥८३॥ आमीनानामुवतिजिनं

५८

नातिगच्छेत्तुमात्रं उद्यानरक्षय उर मठनं प्राप्ता वा उवाचैः । रक्षयध्वजमभिनयने उद्यानार्थं निवृत्तमात्रं उद्यानमयम्
वृक्षोऽप्युपनिमित्तमेव ॥ ८४ ॥ उक्तवाचोवृत्ति
उवाचैः । अहंभूतं समस्तमनं वा विधाया
येनां शक्यं धर्माभिमानः प्राप्ति उद्यान उन्निद्राणां सकादपविशतान्ध्याविशमान्ध्या ॥ उक्तवाचोवृत्ति
मनश्चक्षुः वृत्तिमात्रं वा विधाया कथितमवीरान्
महत्तवापवादिप्रथमननाः समानादुद्यमाना ॥ ८५ ॥

ब्रह्मिण्या बर्कना केवान्भूः पवित्रपदं निष्कना वस्तु यद्वाः ॥८७॥ अथवा ऊं ह्रदि ठवगाग्राममर्द्धेन्द्रानः
मथैजिह्वो कश्चिद्वस्ति उक्तिमथः पविथाः । यस्मिन् हृदये कवगाग्रिमा द्रुवमुद्रुपापाः कल्पात्रेभ्य
स्मिन्गणपदप्रप्राये मद्रधानाः ॥८९॥ यथा यत्ते मधुवमनिर्ः स्मिठकाः ह्यर्धमानाः ममकातिस्मिन् ७५
वैरिजहोमिहते किम्वदतिः । निष्कदीते मुवजैवते कम्पवेक्षधविः म्या ९ मग्नीतायो नृपनृपते सुपतिरि

সমগ্র ॥ ৫৫ ॥ প্রাণাধায়েকপতেমতিসমগ্রঃ স্মারিতোষামহাশ্রবঃ চতুপতিংলা বামঘঞোবহঃ । তনো
 দীচীন্দ্রিযামনুশবে স্ত্রিযগায়ামলোজীশ্রামঃ পাছো
 দমামুয়োত্রজোহ্রাসিত্ত্রশ্রমদেঃ কৈনাসম্মাখিদি
 দেযোবিত্তনস্টিতঃ শ্রবানীহুতঃ প্রতিদিশানেকশ্রমদেয়াত্রহামঃ ॥ ৬০ ॥ ৬০ পশ্যামিঃ বহিঃ ॥ ৬০ স্টিতঃ ত্রিঃ শ্রমদেয়াত্রহামঃ

[illegible]

শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা নোহনঃ প্রবণ পদম্বৈর্জিহ্বায যদ্ব্যনা ৩৩ ॥ হেমাশ্রোত প্রম বিমনিম মানসমা দদানঃ কস্বন কামাৎকন
মুখপদ প্রীতিমেরা বতমা । ধূম শ্রীমঃ মজন প্রবৃত্তিঃ কল্লব্রক্ষাঃ প্রক বিহায়া তিব্রক্ষাধিক বিদাং নিব্বি
অমৃতং নোহনঃ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥
কামগাবিন । যাবঃ কানেন হৃতিমনি নোহনঃ বমুষ্ঠে দ্বিমানঃ মুক্তা জানে শ্রীমিত মনক কামিনী বা প্রবৃত্তা ॥ ৫১ ॥ বিদ্বৎ

नलितरनिताः मेष्टतापः मरिचाः मरिजादप्रहृतमृजः सिद्धाष्टिबोधः । अत्रुष्टोयः मनिमयः उरुप्रमथः निहताः
प्रामादाम्भुतनयितमनः यथादेष्टे सिद्धिमेष्ट ॥ ७७ ॥
क्षमप्रवजसा पापुतामाननस्थिः । सुतापाम्भु
यथनीपः वधुना ॥ ७९ ॥ यथायथाः सिद्धमनिमयाः योनहर्ममृजानि तातिन्तायाः मममवतितामुत्तममृजानिः ।

ଆମେବତ୍ସୁଧାୟିତ୍ରୀବିଷ୍ଣୁକଳ୍ୟାଣପ୍ରଦାୟଃ ସର୍ବଭୂତାନ୍ନିଶ୍ଚୟାନକ୍ଷୟଃ ପରମେଶ୍ଵରହୃଦୟ ॥ ୩୬ ॥ ମନୁକଲ୍ୟାଣନକପତି
ଉପାୟମାବିଷ୍ଣୁକଳ୍ୟାଣପ୍ରଦାୟଃ କଳ୍ୟାଣନିନିକଳ୍ୟାଣ
ବିଷ୍ଣୁକଳ୍ୟାଣପ୍ରଦାୟଃ କଳ୍ୟାଣନିନିକଳ୍ୟାଣ
ରାମକଳ୍ୟାଣନିନିକଳ୍ୟାଣ

প্রবণত্বমিতিঃ ॥৭০॥ নেতানীত্যঃ সত্যতিনাযবিমানামস্মীহানেশানাং সূজনকনিকা দোষমুৎপাদ্যমতঃ ৷৮৮
সাম্প্রদায়িকজনমুত স্ফাটনামজানে ধূমোক্ষা বাবুজতি নিশ্চিনীজজজবা বিষ্ণুততি ॥৭১॥ বহুকী
নাং প্রিয়তমোভজো স্থাসিতা নিসিগনামস্মানানি সূবজানিতা তজ্জানাবনশ্চাঃ । ৮৯ সোযোধ্যাপান ৬৯
বিশদেষ্টা দিতা স্ত্রপাদৈকা স্বপ্নাতি সূষ্টজনমবশ্য সিন্ধুচলকাভা ৷ ৭২ ॥ মহাদেবঃ ধনপতিস্মাং যশস্বিনী

[illegible]

চানেকতকতনখ্যকাতনানকৈতোমেহস্তাপ্যস্তবকনমিতোবানমস্তাববৃক্ষঃ ॥ ৭৭ ॥ বার্নাগমিনমবকতানার
কল্যাপানমার্গাচৈবৈশ্বকমনমুদলেঃ সিন্ধু বিহুসমানৈঃ । বস্ত্রাশ্রোত্রেজতরসতয়োমান
সংসানিহস্তমধ্যপবকপাতিস্তুতম্ভামনিষে
শালে বিদ্রবীলৈঃ কীর্তনৈঃ কনককলনীবেধুনপ্রাশনীযঃ । মদোহিত্যাঃ প্রিয়হিত্যোমে তেষমা কাতবেণ প্রাশ্যেপা ৭০

॥ १७ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीमद्भगवद्गीता ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥
॥ १८ ॥
॥ १९ ॥
॥ २० ॥
॥ २१ ॥
॥ २२ ॥
॥ २३ ॥
॥ २४ ॥
॥ २५ ॥
॥ २६ ॥
॥ २७ ॥
॥ २८ ॥
॥ २९ ॥
॥ ३० ॥
॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥
॥ ३३ ॥
॥ ३४ ॥
॥ ३५ ॥
॥ ३६ ॥
॥ ३७ ॥
॥ ३८ ॥
॥ ३९ ॥
॥ ४० ॥
॥ ४१ ॥
॥ ४२ ॥
॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥
॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥
॥ ४८ ॥
॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥
॥ ५१ ॥
॥ ५२ ॥
॥ ५३ ॥
॥ ५४ ॥
॥ ५५ ॥
॥ ५६ ॥
॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥
॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥
॥ ६३ ॥
॥ ६४ ॥
॥ ६५ ॥
॥ ६६ ॥
॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥
॥ ६९ ॥
॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥
॥ ७२ ॥
॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥
॥ ७५ ॥
॥ ७६ ॥
॥ ७७ ॥
॥ ७८ ॥
॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥
॥ ८१ ॥
॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥
॥ ८४ ॥
॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥
॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥
॥ ९० ॥
॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥
॥ ९३ ॥
॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥
॥ ९६ ॥
॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥
॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥

[illegible]

... ॥ ८ ॥
... ॥ ९ ॥
... ॥ १० ॥
... ॥ ११ ॥
... ॥ १२ ॥
... ॥ १३ ॥
... ॥ १४ ॥
... ॥ १५ ॥
... ॥ १६ ॥
... ॥ १७ ॥
... ॥ १८ ॥
... ॥ १९ ॥
... ॥ २० ॥
... ॥ २१ ॥
... ॥ २२ ॥
... ॥ २३ ॥
... ॥ २४ ॥
... ॥ २५ ॥
... ॥ २६ ॥
... ॥ २७ ॥
... ॥ २८ ॥
... ॥ २९ ॥
... ॥ ३० ॥
... ॥ ३१ ॥
... ॥ ३२ ॥
... ॥ ३३ ॥
... ॥ ३४ ॥
... ॥ ३५ ॥
... ॥ ३६ ॥
... ॥ ३७ ॥
... ॥ ३८ ॥
... ॥ ३९ ॥
... ॥ ४० ॥
... ॥ ४१ ॥
... ॥ ४२ ॥
... ॥ ४३ ॥
... ॥ ४४ ॥
... ॥ ४५ ॥
... ॥ ४६ ॥
... ॥ ४७ ॥
... ॥ ४८ ॥
... ॥ ४९ ॥
... ॥ ५० ॥
... ॥ ५१ ॥
... ॥ ५२ ॥
... ॥ ५३ ॥
... ॥ ५४ ॥
... ॥ ५५ ॥
... ॥ ५६ ॥
... ॥ ५७ ॥
... ॥ ५८ ॥
... ॥ ५९ ॥
... ॥ ६० ॥
... ॥ ६१ ॥
... ॥ ६२ ॥
... ॥ ६३ ॥
... ॥ ६४ ॥
... ॥ ६५ ॥
... ॥ ६६ ॥
... ॥ ६७ ॥
... ॥ ६८ ॥
... ॥ ६९ ॥
... ॥ ७० ॥
... ॥ ७१ ॥
... ॥ ७२ ॥
... ॥ ७३ ॥
... ॥ ७४ ॥
... ॥ ७५ ॥
... ॥ ७६ ॥
... ॥ ७७ ॥
... ॥ ७८ ॥
... ॥ ७९ ॥
... ॥ ८० ॥
... ॥ ८१ ॥
... ॥ ८२ ॥
... ॥ ८३ ॥
... ॥ ८४ ॥
... ॥ ८५ ॥
... ॥ ८६ ॥
... ॥ ८७ ॥
... ॥ ८८ ॥
... ॥ ८९ ॥
... ॥ ९० ॥
... ॥ ९१ ॥
... ॥ ९२ ॥
... ॥ ९३ ॥
... ॥ ९४ ॥
... ॥ ९५ ॥
... ॥ ९६ ॥
... ॥ ९७ ॥
... ॥ ९८ ॥
... ॥ ९९ ॥
... ॥ १०० ॥

॥ १७ ॥ अथ श्रीगणेशोपनिषत् ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ओम् नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ १८ ॥ अथ श्रीगणेशोपनिषत् ॥

॥ १ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ २ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ ३ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ ४ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ ५ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ ६ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ ७ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ ८ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ ९ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ १० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

অপ্রোক্তাধ্বন্যকপতিঃ হৃদিবানুযতে মে কুব্জস্মিতনিমগ্নে সঙ্গমং নোভজত ॥ ১০৭ ॥ মাসকাম্যপ্রতিহিতভুজং নি
র্জেষ্মে নবহে জেপ্ৰস্ম্যযোস্ত্রকথমসিঙ্গবাসনসন্দ
মুজাসূনাৎককিসনবেষ্মকনেষাৎপততি ॥ ১০৮ ॥
দ্বীপযোদক্ষিণেনপ্রদূতাত ॥ আনিস্ম্যতঃপুণবতিমযাভেতসা বা দ্রিযাত ২ পূর্বস্ম্যক্ ৩ বদিকিন্তবেদসিমেতিভুবেতি ॥

मन्त्रिभ्योऽपि विवक्ष्यं दीर्घमास्त्रिधा मासर्वावस्थाप्रवर्तितं नमस्तस्मात् ॥ १ ॥ इत्युक्तं तदनन्तरं नमस्तस्मात् ॥
मे गाद्योऽस्मात् ॥ २ ॥ अतः सप्तमं तद्विषयं कथा ॥ ३ ॥ इत्युक्तं तदनन्तरं नमस्तस्मात् ॥
सुतवांसां गम्यं कथं ॥ ४ ॥ कथास्तु सुतवांसां गम्यं ॥ ५ ॥ इत्युक्तं तदनन्तरं नमस्तस्मात् ॥
मासां त्रैमेयं गम्यं नमस्तस्मात् ॥ ६ ॥ इत्युक्तं तदनन्तरं नमस्तस्मात् ॥ ७ ॥ इत्युक्तं तदनन्तरं नमस्तस्मात् ॥

५४१

३६

ॐ नमो भगवते
शुद्धशुद्धशुद्ध
३३८ ॥ श्रुति श्रुति श्रुति ॥

निजगन्धकिमपि कदतीमने
निर्गन्धे ॥ एतन्मात्रं
मात्रं किमपि विवहकापद ॥
॥ इति तस्मिन् वक्ष्यते ॥

৮৪১

৩৬

স্বর্নাঙ্কুরিলাস. কান
স্বর্নাঙ্কুরিলাস

স্বর্নাঙ্কুরিলাস

৩৬
৩৬

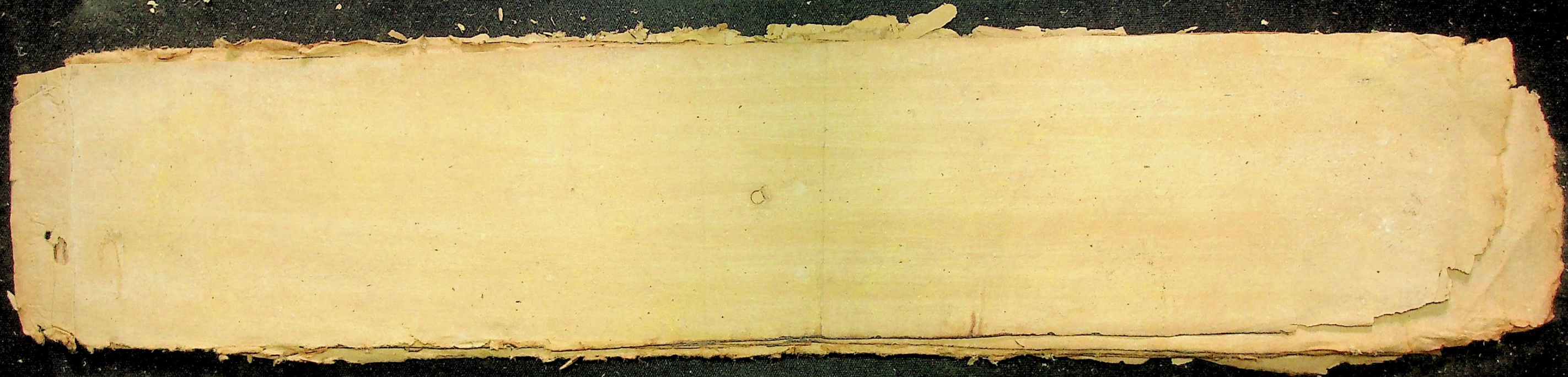
৮৪১
৩৬

স্বর্নাঙ্কুরিলাস
স্বর্নাঙ্কুরিলাস

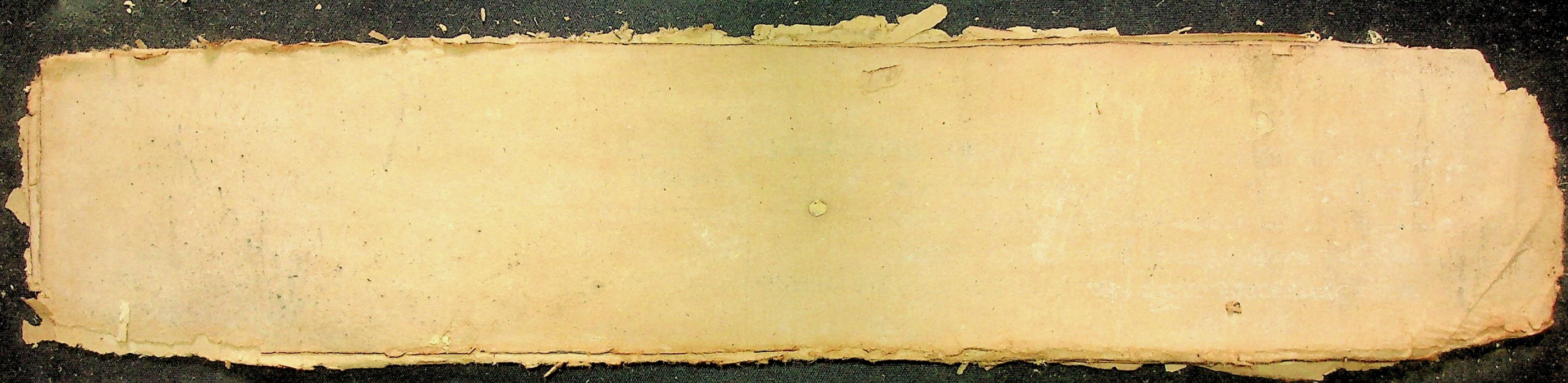
৩৬

সকলি পোত ফল মিথ কথ্য দীর্ঘ যামা স্ত্রি যামা সর্বা বহু স্রব লি কথ্য সন্দ সন্দা তন্য মা ১ ইত্যং বেতনং হেন নর নেহ ব্রত ধর্মার্থনং
মে গাধো ২ মা তি ২ জত মন বনং হে দ্বি যোগ কথ্য তি ২ ই ১ মা সনং বন বিগন যন্য মা সন বন মে তৎ কথ্য নি বন দি
সুত বাং মা গন ২ কান তৎ ১ কথ্য স্তন্য সুপা সুপা গত ২ঃ ১ মা সন কথ্য গৌ মা সী তৎ গৌ লুপা বিত কনে মি ক মে গ ১
মা পা তে মে তু জ গ ল্য ব নো দ্বি তে মা সী ল্য গো মা সানো গন গ ম ব তত বো নো ত নে মী ন যি লো ১ গন্য জা বাং বিব হ দ্ব নি ত ২ ত মা

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥







৬৬

উঁনমঃ নিবায় ॥ অথানিবায়তং ॥ তৎসম্বৎসরপ্রদীপে ॥ বৎসেনপ্রথমঃ স্তানঃ দক্ষাচৈব দ্বিতীয়কে । ইতি যেন তথা জেন চতুর্থমধুনাত
থা ॥ প্রথমপ্রহবে । উঁহীঃ দানানায়নমঃ ইতি দ্ব্যম্বেন স্তানায়িহা
জপপরাযনঃ । কবোমিবিধিবদন্তঃ গৃহগাথ্যঃ মনোময় ॥ ইহ
প্রহবে উঁহীঃ আদ্যোবায়নমঃ ইতি দক্ষা স্তানঃ । অথমস্তদুঁন
দুঁনময়াগহ ॥ ইতি প্রহবে উঁহীঃ রামদেবায়নমঃ ইতি বৃণেন স্তানঃ অথমস্তদুঁন
পুনঃ স্তানেন স্তানায়ো ॥ অথমস্তদুঁন নিবায়বিকৃতং দেবপুজা
নেনাথ্যঃ দহাগ্রাদিভিঃ সামাথ্যঃ সম্যকপূজনে ॥ দ্বিতীয়
মঃ নিবায়নাত্মায়সব্বপাপহরায়ত । নিবায়ো দদাত্যথ্যঃ পঙ্গী
উঁহীঃ মদাবিদগো কেন দক্ষোহঃ পাব্যতীশ্বর । নিবায়ো

৩

দদাম্যহমুমাভ্যুদয়াদম ॥ চতুর্থপদ্যবৈষ্ণবোঁ মাধ্যাজাত্যনমঃ ইতিমধুনাম্মাণ্যে ॥ অথ্যমন্মদুঁ ন্যায়োচ্যামেকানিপাণানিবন
 কিব । নিব্বাণোদদাম্যহমুমাভ্যুদয়াদম ॥ অথকথা ॥ পূর্বাফেনানামাবে সম্ববু বিহৃষিত । দেবদানবগন্ধর্ব
 সিদ্ধচারণসেবিত । অম্বোভিঃপরিবৃত্তব্রহ্মভিঃবিষ্ণুভিঃ
 বৈসন্ধানকবণাবৃত । পাৰিজাত্যকুশোম্যমক্কামাদিতদি
 শ্যামমহাভিকণাভিত । অম্বাধিবিনোদুতবেদধনি নিনাদিত । উবাসমুচিবঃ প্রীত্যভোনিবিজয়াসহ । সুখোদিতকদাচিতু

৮৭

দেবপদ্যকবঃ ॥ দেববাচ ॥ কৰ্মণা কৈবল্যবান্ বাতনতপসাদিবা । ধৰ্ম্মার্থকামমোক্ষানাং হেতুসহং পাবিতুশাসি । ইতি দেববাচঃ ॥ অহা
 জাবনং কৈবল্যবাচ ॥ কৈবল্যেনৈবৈতং পদ্যম্যতিথিঃ শ্রী
 পদ্যমং সৰ্ব্বাণঃ পদ্যাদতিমাং কৃতং । বস্মাভেনববস্ত্রে
 বস্মাদতিমাং কৈবল্যবস্ত্রমচৰীসমাহিতঃ । নিবাসিষং
 ভিত্তেনৈব । বাতিশেষেনৈব পদ্যাদতিমাং কৃতং । সৰ্ব্বমুপাশ্রয়বিধিবিধিৎপদ্যাদতিমাং কৃতং ॥ ততঃ নিবাসিষাং কৈবল্যবস্ত্রমচৰীসমাহিতঃ ॥

২৬

পাল্পপাল্পমা° । নহাদোম্ভুতেনরাণি লিঙ্গেরাঃ স্ফারবেপিচ । বিব্রপাষেঃ পূজ্যামালিন্দপীঠমুৎসবতঃ । একতঃ সর্বপূজ্যানিবিব্রপ
এতথেকতঃ । মানিমুখ্যপ্রবালে°ঃ স্ফুপূজ্যাদিভিসুখা । নতযজ্ঞযত্নেীতি বিব্রপাষেযথামম । প্রহবেপ্রহবে
স্মান° পূজ্যামুৎসব বিমোষতঃ । সর্বোত্তমমহামাদোঃ । স্ফপূজ্যাদিভিসুখা । স্বামনপ্রথম° স্মান° দক্ষাচৈবদ্বিতী
য়কে । হুতীযনতথাস্তনচতুথেমধুনাতথা । পঞ্চমাবিবিধা । নেনমুনমল্লগচৈবহি । পূজ্যেনমা° যথাঃ স্তম্ভানুগীণাদিভিন্বঃ
অপবেষুসুখাবিপ্লান° সমস্তক্যানুভাবতঃ । ভোজয়িহাযথাঃ স্তম্ভপাবণ° স্ফমাচবে° । স্বরমেতৎ স্ত° দেবিসমলীতিকব° পব° । যজ্ঞদান

৪৬

তপঃসম্বন্ধকরাং নাইতিষোভনীং । অতঃপুত্রভায়েনগানপালমরাশ্রয়াৎ । সপ্তদ্বীপস্রবঃপুত্র্যাংজাযতেকামচাৰ্য্যত । তিথোবস্মাংমা
 হাশ্ব্যংকথমানংমথ্যশ্রু ॥ অস্তিরাবানসী নামপুত্রীসম্ব
 মব্বৎলক্ষ্যবৎঃকুবৎপিসিষ্কঃ পিসিকেশকঃ । বাপ্তবা
 বিবিধান পশুন । মাংসভাবংবহনগোহংসকীয়ংগন্ধমু
 মাহেণ্ডোঃসুস্রাগমুনৈকৈম্যচিওবোঠ । অথাস্তমংগমংসুস্থানিনাশ্রুৎসুতয়শ্রদা । ততোউত্থায়মোপথ্যনকিহুত্বাভিমিহাপূহং । ইত্যনম্ব

১৩৩

হুতামগ্নবসে প্রবন্ধে শ্রীফলসঙ্কে । নগপাসে বৈবীক্যং সত্যং বরদক্ষমণী ৩৫৬ মুনোপদতী দ্বিতীয়া নীতি ৩৪ মুখা ৩৪
কম্পানিচকনে বর ৪৫ জাগা বদনা বাণো পুত্রো নিহা বরা বি
দ্বিঃ সাতনি বাহা ব ৪৫ প্রবন্ধ ৪৫ অথচ দেহ স ৫৫ সগি হিমপা
ত্ম্যতনে বজা বেন মম গাধা মনু হ ৫৫ । ত্রিমাগ্না গাধা দেবি
তথ্যাদি ত্রিমাগ্না গাধা মেষ্ঠা মনু হ ৫৫ । অথচ ত্রিমাগ্না গাধা মেষ্ঠা মনু হ ৫৫ । কদাচিদা যুগ ৪৫ মেঘ মনু হ ৫৫ । বরদক্ষমণী ৩৫৬

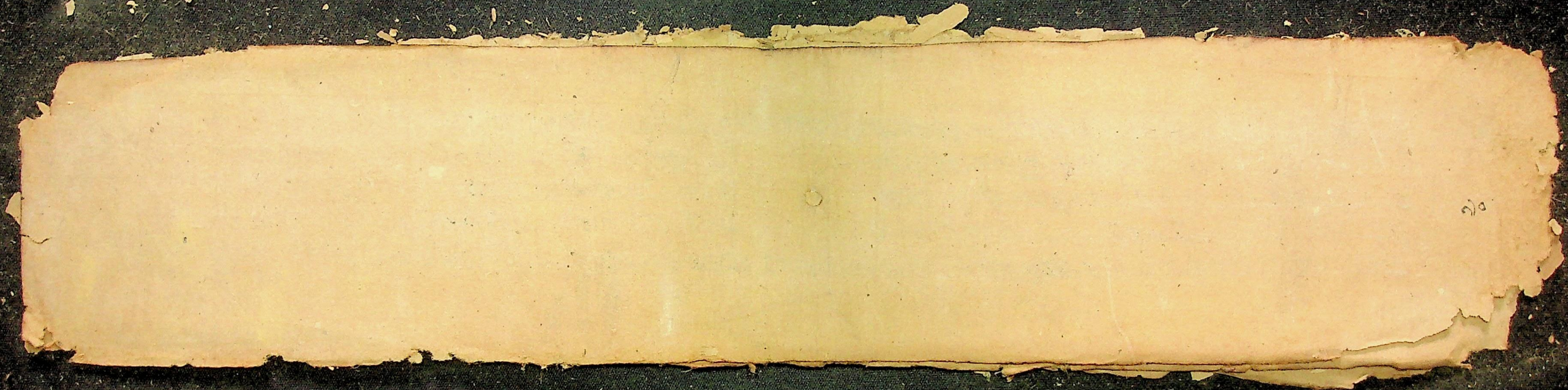
গা । দেবযোগে ৩৫৬ মুনোপদতী দ্বিতীয়া নীতি ৩৪ মুখা ৩৪
তামোপা বি । জগে ৩৫৬ তদা বোহা ৫৫ তদা বচুতি ক্ষণা ৫৫
বিশ্বপদ ৫৫ চন্দ্রা বি । নন্দান ৫৫ নত্যা পূজা নদে বোহা ৫৫ দি সচু ব ৫৫
বিশ্বপদ ৫৫ চন্দ্রা বি । নন্দান ৫৫ নত্যা পূজা নদে বোহা ৫৫ দি সচু ব ৫৫

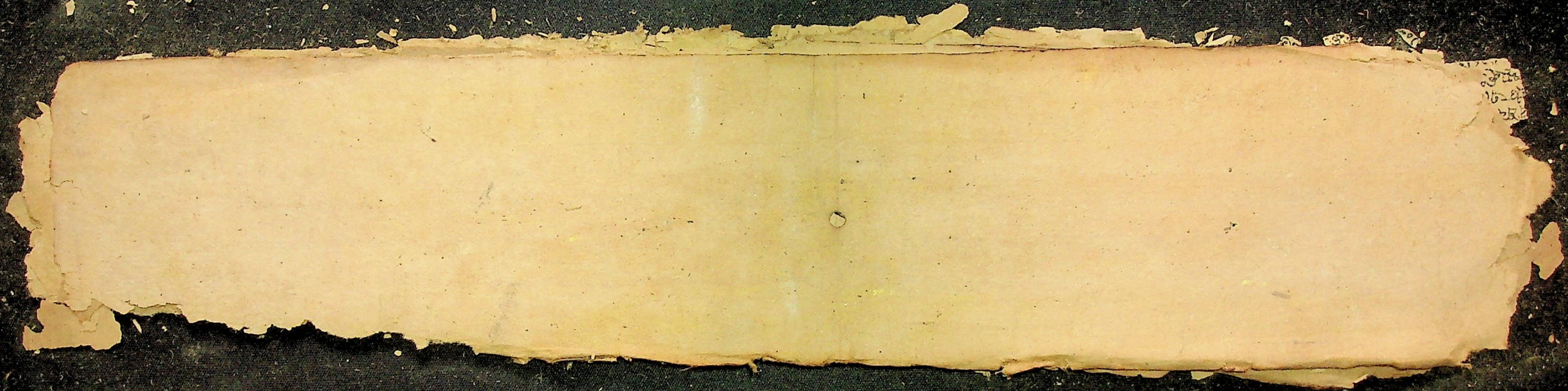
৪৬

নীত্ৰং পামান বিবিধেন চ । প্ৰকৃষাৎ বাৰ্য্যামা সমদী যোম নিযো গচ্চ ৷ তথো ভাষা ব্যাধি হতা কন হং সমহান হং ৷ তথা হতা মদী যেন হুতন য
 মাকি কৈ বৈ ৷ যমং সমান যামা সমং প্ৰবাহাব মুজ্ঞনং ৷ হুতন
 বং তম হুতী ৷ হুতন হুতন সৰ্ব্ব হুতন নন্দিকৈ যব ৷
 হুতন হুতন বান ৷ পামান কবো দ্বাধো ধম বাজ মুখা পামা
 বিধো বান্ধি হানন্দিনং যম ৷ হুতন হুতন যোগে হুতন স্কী য় ৷ নিবতা বিত ৷ প্ৰমমম প্রভা বেন প্ৰতম বব বস্তি নি ৷ থা বা চ হুতন বেন কিম

৪

ন্যকথয়া মিতে ॥ শুভোভাগবদ্বাক্যং বিস্মিতাহিমলানজা ॥ প্রসঙ্গঃ সত্যদেবিত্বং নিব্বাষিতং সদা ॥ বান্ধবোন্মাদকথায়ত্তমে
৬৭ পতিত ॥ শুভোভাগবদ্বাক্যং প্রথমাং বাদ্যোতক্রিয়ার
হপাষিত্তনপুজনীয়া নিব্বাষিত্তনপুজনীয়া ॥ গ
ন ॥ ইতি নিব্বাষিত্তনপুজনীয়া ॥ * ॥ * ॥
উসংসারকেন্দ্রাদাক্ষর্যভূতনানেনাক্ষর্য ॥ প্রসঙ্গঃ সত্যদেবিত্বং নিব্বাষিত্তনপুজনীয়া ॥ গ
৬৭ পতিত ॥ শুভোভাগবদ্বাক্যং প্রথমাং বাদ্যোতক্রিয়ার
হপাষিত্তনপুজনীয়া নিব্বাষিত্তনপুজনীয়া ॥ গ
ন ॥ ইতি নিব্বাষিত্তনপুজনীয়া ॥ * ॥ * ॥





[illegible]

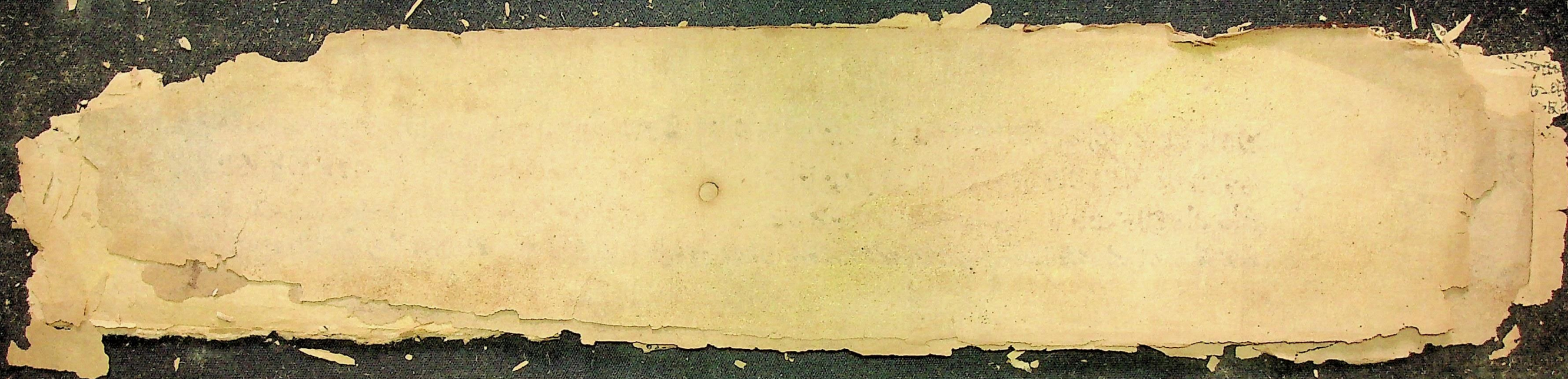
১০০ পিটনমর্মেতপ্যভেদেযোমহারিভিঃ । শাক্তো মনোমর্মেতপ্যভাক্তি মাক্তি মর্মেতপ্যভিঃ । নমোহং পিটনমর্মেতপ্যভিঃ মর্মেতপ্যভিঃ
 যান্তিমান - । শাক্তো মনোমর্মেতপ্যভাক্তি মাক্তি মর্মেতপ্যভিঃ ২ । নমোহং পিটনমর্মেতপ্যভিঃ মর্মেতপ্যভিঃ
 হেমাধারে মর্মেতপ্যভাক্তি মাক্তি মর্মেতপ্যভিঃ ৩ । নমোহং পিটনমর্মেতপ্যভিঃ মর্মেতপ্যভিঃ
 মনোমর্মেতপ্যভাক্তি মাক্তি মর্মেতপ্যভিঃ ৪ । নমোহং পিটনমর্মেতপ্যভিঃ মর্মেতপ্যভিঃ

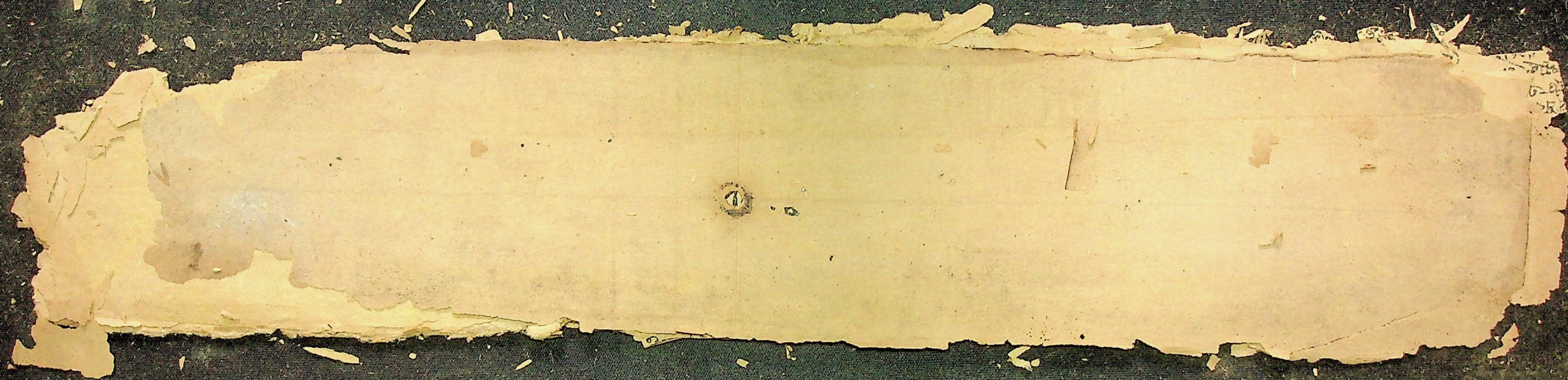
পবিত্রং—। কামকোষমতিমায়াক্রিয়াঃ সিদ্ধপূজনং । অবশ্যঃ সিদ্ধবধ-প্রদাশ্চিহ্নবোদ্ধিঃ—। পক্ষীঃ স্তূতাঃ শুভ্রাঃ
 কিং নদগুপ্ত-সিদ্ধমগ্নং ॥ গাংক-প্রযত্বাচ ॥ হি ৷ ১৫ ৷ ১৬ ৷ ১৭ ৷ ১৮ ৷ ১৯ ৷ ২০ ৷ ২১ ৷ ২২ ৷ ২৩ ৷ ২৪ ৷ ২৫ ৷ ২৬ ৷ ২৭ ৷ ২৮ ৷ ২৯ ৷ ৩০ ৷ ৩১ ৷ ৩২ ৷ ৩৩ ৷ ৩৪ ৷ ৩৫ ৷ ৩৬ ৷ ৩৭ ৷ ৩৮ ৷ ৩৯ ৷ ৪০ ৷ ৪১ ৷ ৪২ ৷ ৪৩ ৷ ৪৪ ৷ ৪৫ ৷ ৪৬ ৷ ৪৭ ৷ ৪৮ ৷ ৪৯ ৷ ৫০ ৷ ৫১ ৷ ৫২ ৷ ৫৩ ৷ ৫৪ ৷ ৫৫ ৷ ৫৬ ৷ ৫৭ ৷ ৫৮ ৷ ৫৯ ৷ ৬০ ৷ ৬১ ৷ ৬২ ৷ ৬৩ ৷ ৬৪ ৷ ৬৫ ৷ ৬৬ ৷ ৬৭ ৷ ৬৮ ৷ ৬৯ ৷ ৭০ ৷ ৭১ ৷ ৭২ ৷ ৭৩ ৷ ৭৪ ৷ ৭৫ ৷ ৭৬ ৷ ৭৭ ৷ ৭৮ ৷ ৭৯ ৷ ৮০ ৷ ৮১ ৷ ৮২ ৷ ৮৩ ৷ ৮৪ ৷ ৮৫ ৷ ৮৬ ৷ ৮৭ ৷ ৮৮ ৷ ৮৯ ৷ ৯০ ৷ ৯১ ৷ ৯২ ৷ ৯৩ ৷ ৯৪ ৷ ৯৫ ৷ ৯৬ ৷ ৯৭ ৷ ৯৮ ৷ ৯৯ ৷ ১০০ ৷
 ক্রেন্নিনেচক্যবসিদ্ধপনং । শুভ্রাঃ চিহ্নাঃ সিদ্ধপূজনং । ১৫ ৷ ১৬ ৷ ১৭ ৷ ১৮ ৷ ১৯ ৷ ২০ ৷ ২১ ৷ ২২ ৷ ২৩ ৷ ২৪ ৷ ২৫ ৷ ২৬ ৷ ২৭ ৷ ২৮ ৷ ২৯ ৷ ৩০ ৷ ৩১ ৷ ৩২ ৷ ৩৩ ৷ ৩৪ ৷ ৩৫ ৷ ৩৬ ৷ ৩৭ ৷ ৩৮ ৷ ৩৯ ৷ ৪০ ৷ ৪১ ৷ ৪২ ৷ ৪৩ ৷ ৪৪ ৷ ৪৫ ৷ ৪৬ ৷ ৪৭ ৷ ৪৮ ৷ ৪৯ ৷ ৫০ ৷ ৫১ ৷ ৫২ ৷ ৫৩ ৷ ৫৪ ৷ ৫৫ ৷ ৫৬ ৷ ৫৭ ৷ ৫৮ ৷ ৫৯ ৷ ৬০ ৷ ৬১ ৷ ৬২ ৷ ৬৩ ৷ ৬৪ ৷ ৬৫ ৷ ৬৬ ৷ ৬৭ ৷ ৬৮ ৷ ৬৯ ৷ ৭০ ৷ ৭১ ৷ ৭২ ৷ ৭৩ ৷ ৭৪ ৷ ৭৫ ৷ ৭৬ ৷ ৭৭ ৷ ৭৮ ৷ ৭৯ ৷ ৮০ ৷ ৮১ ৷ ৮২ ৷ ৮৩ ৷ ৮৪ ৷ ৮৫ ৷ ৮৬ ৷ ৮৭ ৷ ৮৮ ৷ ৮৯ ৷ ৯০ ৷ ৯১ ৷ ৯২ ৷ ৯৩ ৷ ৯৪ ৷ ৯৫ ৷ ৯৬ ৷ ৯৭ ৷ ৯৮ ৷ ৯৯ ৷ ১০০ ৷
 স্তবঃ— ॥ কচিকবাচ ॥ নমস্তুহং সিদ্ধপূজাযেবমস্মাদি দেবতাঃ । দেবতাসিহ্নাঃ সিদ্ধপূজাযেবমস্মাদি দেবতাঃ । নম

শ্রীকৃষ্ণায় নমঃ । অক্ষয়ানন্দোপভোগঃ । উবাচ । প্রমত্তোহস্মি ।
- ৫৪ - পতি° । পিতৃণা° বচনোক্তেন যৎ কথুমতিবা ।
বান্ধিত° ॥ অক্ষোবাচ ॥ প্রজাপতিঃ স্তব্ধঃ ।
প্রমত্তোহস্মি । অক্ষোবাচ । প্রজাপতিঃ স্তব্ধঃ ।
প্রমত্তোহস্মি । অক্ষোবাচ । প্রজাপতিঃ স্তব্ধঃ ।

দিবাং । কথ্যমেনতমানোমোপিহবাক্যাদিদিপিতঃ । চিত্তমেবাপমস্তীমতিবোহিগমানসঃ- । কিঙ্কবোমিকগ
 জামিকমং মোদাবসং গ্রহঃ । ক্ষিপ্ৰং তবোম ৭ পিতৃণাং মমাত্মদয়কাবকঃ । ইতিচিহ্নযজ্ঞস্ত্য
 মতিজাতামহাভেনঃ । ওপসাবাধযায়েনং ক্রমানং ৮ কমনোভবং । ওপেবম পদং দিকং ওপস্তে
 পেগরেধসঃ । ওপস্থিতস্তিবং কান ববেপ্তনিয়মোহিঃ । আবাব্যামাসচঃ পবং নিয়মমাসিঃ ৯-১০৮

ত্রৈলোক্যেশ্বর ॥ অম্বকচিহ্নবঃ ॥ ব্রহ্মোহং সপ্রভং কোমপিচবৎ সম্প্রদাশ্রিত । অধ্যাত্মমোহবিদ্যাস্বপ্নকো
 দাবসংগ্রহঃ । দিতবদ্ভূতঃ ॥ অস্মাকং পতনং বৎ সত্তবৎ প্রাণোপাশ্রিতঃ ॥ নুনং এতদ্বিকীর্ণ
 নাভিনন্দ্যসিনোদকঃ । হৃৎকোমপিচবৎ স্তম্ভপন্য ভোমুনিমত্তম । বহুবৎ মহাদেয়া দীপ্যবাহুঃ
 হর ॥ মার্কণ্ডেয়উবাচ ॥ সত্ত্বনাশিত্বাকো নন্দ্যমদ্বিগদমানসঃ । কথ্যাত্ননামো বিদ্যারিত পবিত্রগ্রামমে





इति नमो नमो नमो

যনম: ত্রি: সৎ প্রজ্ঞা তদবিপাকং বা বিষ্ণুং যনম: এতৎ সন্ত্রা দানং যত্রা স্ত্রীনা যনম: এতৎ গুরু পুষ্টিং এতৎ আনম: ১৫৪
 বিষ্ণুর্ভৌ ৩৭ সনদ্যো আদি আশ্বক

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

উৎস: *উৎস*

১৯৫৭ ১৯৫৮

कलशवासा

[illegible]

বু ১০০০ - আমায় দেব [কিছু] - ১০

স্বপ্নাদিচন্দ্রিকা

১। অথ ইতি চন্দ্রিকা
২। অথ ইতি চন্দ্রিকা
৩। অথ ইতি চন্দ্রিকা

যে বিমানে নিবসন্তুঃ । জ্যোতিষানন্তমনামোতি
নিবসন্তুঃ স্বপ্নাদিচন্দ্রিকা । প্রদান
য । ইতি চন্দ্রিকা । ইতি চন্দ্রিকা । ইতি চন্দ্রিকা
জাঃ স্বপ্নাদিচন্দ্রিকা । ইতি চন্দ্রিকা । ইতি চন্দ্রিকা

স্বাভাবিক ন্যায়বোধী প্রাচীন
প্রাচীন ন্যায়বোধী প্রাচীন
প্রাচীন ন্যায়বোধী প্রাচীন
প্রাচীন ন্যায়বোধী প্রাচীন

স্বাভাবিক ন্যায়বোধী প্রাচীন
প্রাচীন ন্যায়বোধী প্রাচীন
প্রাচীন ন্যায়বোধী প্রাচীন
প্রাচীন ন্যায়বোধী প্রাচীন

সমাদিগ্নমাতৃকানাং
। প্রভৃতিমাতৃকানাং
। প্রভৃতিমাতৃকানাং
। প্রভৃতিমাতৃকানাং

। মাসান্তপূজাওবিধিষ্টকাণ্ডে । যেরূপবান্তে
পূজাদ্বিজানাং কুমুদেন্দুজাযো যেরূপবান্তে
। প্রভৃতিমাতৃকানাং । প্রভৃতিমাতৃকানাং
। প্রভৃতিমাতৃকানাং । প্রভৃতিমাতৃকানাং

ወደፊት ለሚመጣ ሕዝብ ማዕከል ሆኖ ሚሰራለች፡

1022 1010 1011 1012 1013 1014 1015

தேவியு லுழுவ லுலு

11. 1521. 2. 10. 1. 1. 1. 1.

ଅନୁଷ୍ଠାନ ୨ ଶିକ୍ଷାପ୍ରାପ୍ତ ଶିକ୍ଷକ ୪ - ୮

বিজ্ঞানা° - ১. আশ্রয়ঃ সুবর্ণা° মম বৈশং প্রজা

শ্রী ব্রহ্মদেব: প্রজ্ঞাপা: সোমসুত। -।

जिहवामं प्राणिं नमस्कृत्य मेदिनीं - १ उवाच हि स

...

12. 3. 10
10. 10. 10
10. 10. 10

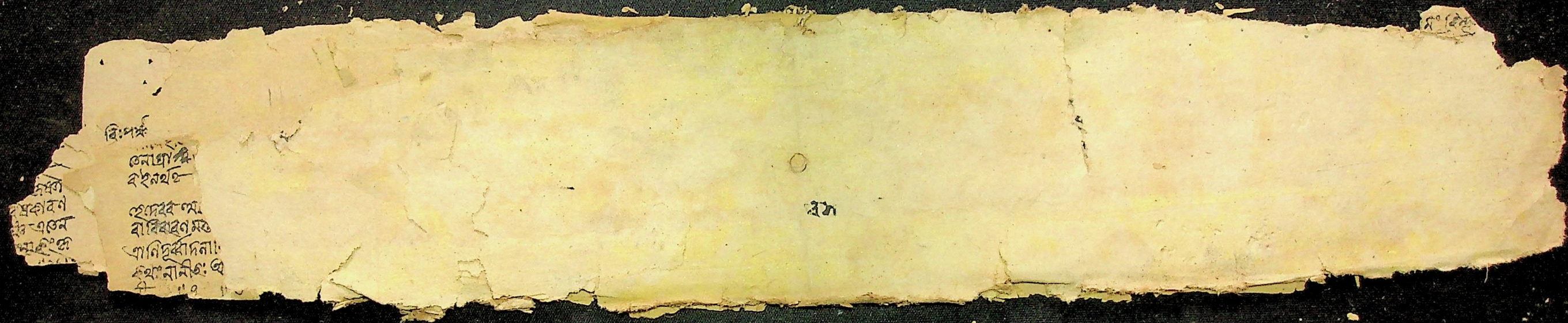
[illegible]

۲۵

三

10. 21. 18. 19.

[illegible]



ବି:ମର୍ଦ୍ଦ

ତନାପାମି
ବହନଥ

ହେମବଲ
ବାବିବରମ

ଆନିପୁରୀନା

ବିଧାନାମି: ୭

ନି ୧୧ ୧୧

ବି

ਸਧਰਾ ਨਿਵਾਸੀ ਨਸਲਾ ੨੨੨

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ महामयस्यैव शक्तिर्वैष्णवाय वक्ष्यते ॥ सा जैवैव शक्तिः

[illegible]

... ॥ १ ॥ ମୋକ୍ଷାଦି:

মস্তকে - [স্বাধীনতা]

॥ १ ॥ इतिनी यथा
॥ २ ॥ कुर्यात् कुरुत् यो गेहि

গুণবান্ধৱ ॥ ৩ ॥ দেববান্ধৱা দৃষ্টেবা বিবাবন

[illegible]

১১ কোম্পানি: মুখ্য-২

শ্রীভগবদ্গীতা: সহস্রনামেন গোবিন্দ: ১০৮ অঙ্ক: ১০৮

मैत्रि विद्वान् २ ॥ २२ ॥

हविनीन्द्रशुभगर्भसूदशुभ्यै।

पुः पदवतः सप्तवाहिनः नववर्षा
सप्तवाहिनः सप्तवाहिनः सप्तवाहिनः ॥२

১) দ্বিঘাত সমীকরণে

जिदगा०-॥ ५ ॥ ४ ॥

[illegible]

[illegible]

॥ ७ ॥ बुद्धिश्चिदाकाशां न कनेना विहाति । पूजितामहं देवेन
 साकं नारवदाडि ॥ ८ ॥ भुवनां नृणां कथाहे मेरुपर्वतजिह्वा । तं कथां विवरां दधाम
 होवादिजिह्वपतिः ॥ ९ ॥ सकलवक्त्रवेना यां वसुधां हि जगद्भवेत् । अथ किं याप
 दंष्ट्रं बुद्धेर्वापि न बुद्धते ॥ १० ॥ त्रिवेणीव समुद्राकां न कृण्विषं पला । इहापि गोपितः किं वा बुद्धे

[illegible]

(२५)

विःपक्षी

विद्यवा ३

22-16

कविः वि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अथर्वश्रुति

[illegible]

101. 87. 1. 2.
15. 8. 8. 7.
2. 1. 1. 1.
1. 1. 1. 1.

121/13

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Handwritten text in Tamil script, likely a manuscript fragment. The text is written on a piece of aged, yellowed paper with significant damage and tears. The script is in a traditional style, possibly from the 18th or 19th century. The text is arranged in several lines, with some characters appearing to be in a different script or dialect, possibly indicating a mix of languages or a specific regional variant. The text is mostly illegible due to the damage and the style of the script.

Handwritten text in Tamil script, likely a manuscript fragment. The text is written on a piece of aged, yellowed paper with significant damage and tears. The script is in a traditional style, possibly from the 18th or 19th century. The text is arranged in several lines, with some characters appearing to be in a different script or dialect, possibly indicating a mix of languages or a specific regional variant. The text is mostly illegible due to the damage and the style of the script.



